maryammonthly.in

AUGUST 2020 - 30:00

मरयम

सही सोच से ही बनती है मज़बूत फ़ैमिली

ख़ुदा ऐसा नहीं है

नाशपाती का पेड़

सब्ज़ी वाले

बच्चों के लिए प्ले–डो बनाइए

ENGLISH MEDIUM

Our Focus

- CBSE Curriculum
- Low Student-Teacher ratio
- Interactive teaching techniques
- Loving and caring atmosphere
- Qualified & Dedicated Teachers
- Deeni Taleem

taha
SCHOOL

ADMISSION OPEN

Pre-School To Class V

Pre-School Also Available

MUSAHIB GANJ, LUCKNOW

8840206083, 6392442920

من کنت مولاه فهذا علی مولاه

RNI No: UPHIN/2012/43577

Monthly Magazine

मरयम

Vol:9 | Issue: 06 | Aug, 2020

इस महीने आप पढ़ेंगी...

सही सोच से ही बनती है मज़बूत फ़ैमिली	6
ख़ुदा ऐसा नहीं है	8
ख़ुदा के साथ कारोबार कीजिए	11
ज़ुहैर इब्ने क़ैन	13
शहरयार का मशहूर क़सीदा	14
क्या मिट्टी से खेलना ख़तरनाक है?	16
मोहब्बत ही दीन है	17
बात जब मुबाहेला तक पहुँची	19
हज़रत अली[अ] की विलायत	22
नाशपाती का पेड़	26
मौत का सामना	28
सब्ज़ी वाले	31
करबला में ईमान और तौहीद के जलवे	32
डिश	34
सुलह से जंग तक	36
बच्चों के लिए प्ले-डो बनाइए	38
शरई अहकाम	40
वह भी राज़ी अल्लाह भी राज़ी	41

Chief Editor
S. Mohd. Hasan Naqvi

Editorial Board
Nazar Abbas Rizvi
Mohd. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi
Imtiyaz Abbas Rizwan

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Mohammad Aqeel Zaidi

Distribution Manager
Baqir Hasan Zaidi

Contributors
Sajjad Haider Safavi
M. Husain Zaidi

Graphic Designer
Siraj Abidi
98390 99435
imagine graphix

Typist
S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामन्दी हो, यह ज़रूरी नही है। 'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कार्रवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले संपादक से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कॉन्टेन्ट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कार्रवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद हम किसी भी तरह की पूछताछ और कार्रवाई पर जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक 'मरयम' के लिये आने वाले कॉन्टेंट्स में ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi
printed at Swastika Prinwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and
published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003

MARYAM A/C: 55930 10102 41444 **Union Bank of India**
Tahseenganj Branch (Unity Branch) Lucknow **IFSC: UBIN0555932**

सब्क्रिप्शन के लिए चेक/ड्राफ़्ट पर सिर्फ़ MARYAM लिखिए।
चेक, ड्राफ़्ट और मनी आर्डर इस पते पर भेजिए:
Mohd. Hasan Naqvi, 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 99566 20017, email: maryammonthly@gmail.com

Head Office: Imambada Ghufranmab, Chowk Mandi, Lucknow
Registered Office: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

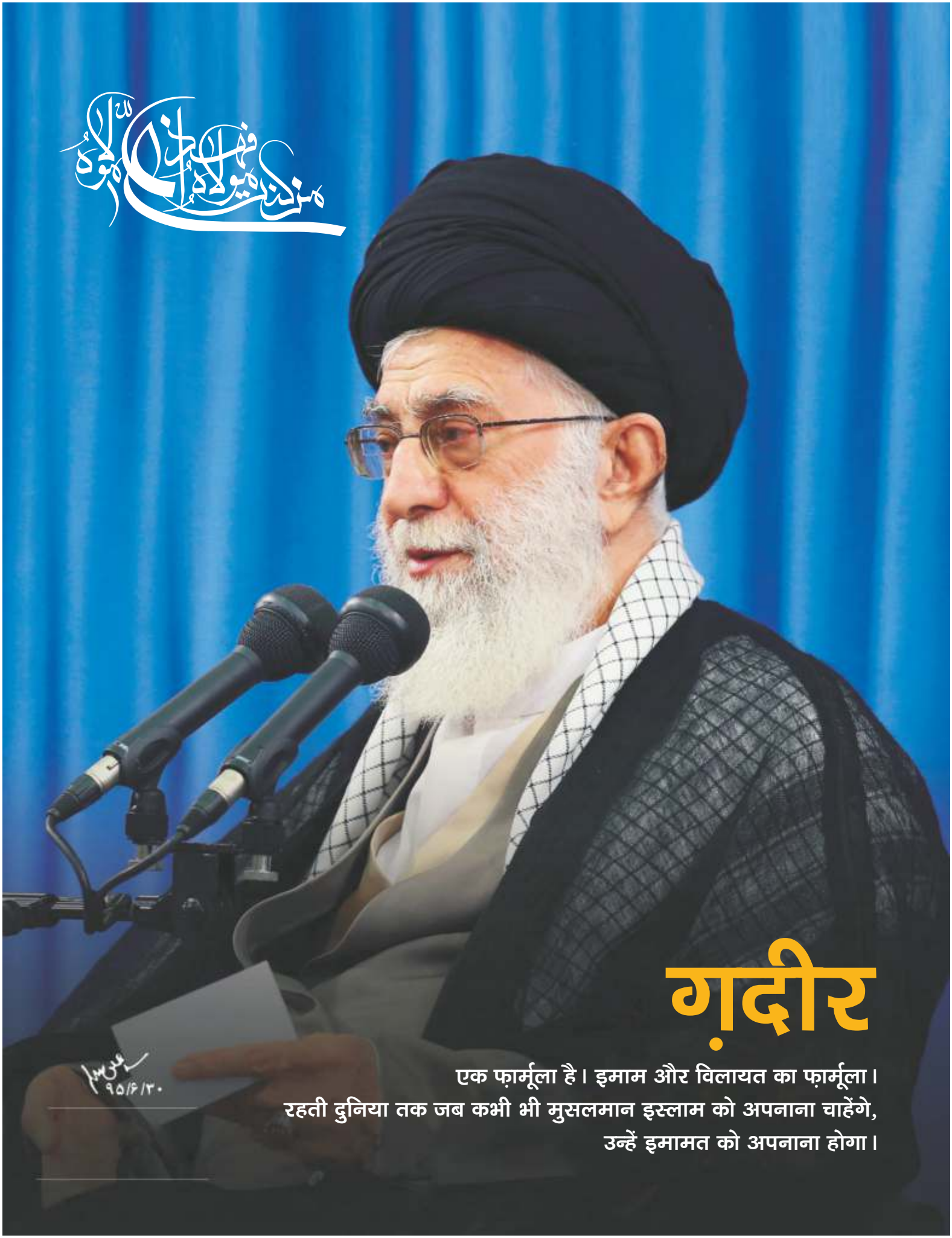

ग़दीर

एक फ़ार्मूला है। इमाम और विलायत का फ़ार्मूला।
रहती दुनिया तक जब कभी भी मुसलमान इस्लाम को अपनाना चाहेंगे,
उन्हें इमामत को अपनाना होगा।

सही सोच से ही बनती है मज़बूत फ़ैमिली

■ अफ़रोज़ इनायत

अम्मी की आँख मुन्ने के रोने की आवाज़ पर खुली तो वह फ़ौरन उठ खड़ी हुई और बहू के कमरे में आ गई।

''क्या हुआ बेटा? यह क्यों रो रहा है?''

सास को अपने पास देख कर रबीआ को ढारस हुई।

''बहू शायद इसके पेट में दर्द है, लाओ मुझे दो बेटा इसे... देखूँ।''

''हाँ! मुझे लग रहा है कि इसके पेट में दर्द ही है। यह देखो! यह टाँगें भी सीधी नहीं कर रहा है और इसका पेट भी सख़्त हो रहा है। बेटा ज़रा ज़ैतून का तेल दो...।''

अम्मी ज़ैतून के तेल से हलके हाथों से मुन्ने के पेट पर मालिश करने लगीं और थोड़ी ही देर में मुन्ने को आराम मिल गया।

''अम्मी! यह तो सोने लगा है।''

''हाँ बेटा! अब इसे आराम मिल गया है। ख़ुदा ना करे, अगर सुबह में फिर से दर्द हुआ तो इसे डॉक्टर के पास ले जाएंगे। अब तुम भी सो जाओ।''

''जी अम्मी शुक्रिया!'' बेटे को आराम मिलते ही रबीआ को भी बड़ा सुकून हुआ।

अम्मी के जाने के बाद रबीआ सोचने लगी कि शौहर भी आज-कल ऑफ़िस के काम से शहर से बाहर गये हुए हैं। शुक्र है कि मैं ज्वाइन्ट फ़ैमिली में सबके साथ हूँ और सबकी तरफ़ से वक़्त पर मदद भी मिल जाती है।

*****

अम्मी और बाबा को आज फिर छोटी बहू के कमरे से ज़ोर-ज़ोर से बोलने की आवाज़ें आ रही थीं। चार महीने दोनों की शादी को हो गये थे लेकिन छोटी-छोटी बातों पर बहू और बेटा उलझ पड़ते थे। अम्मी ने दोनों के बीच आना ठीक नहीं लगा। सोचने लगीं कि वक़्त के साथ दोनों ख़ुद ही संभल जाएंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ बल्कि अब तो यह आवाज़ें ऊँची होती जा रही थीं। अम्मी और बाबा इस बात पर बहुत परेशान हो गये थे। इसलिए बाबा ने अम्मी से कहा, ''तुम बहू को समझाओ। इसका तरीक़ा सही नहीं है। शौहर पर इस तरह से चिल्लाना... सही है क्या यह तरीक़ा?''

अम्मी ने हंसते हुए कहा, ''और अपने बेटे के बारे में क्या ख़याल है। वह भी बड़ा गुस्सैल है। बर्दाश्त तो उसमें भी नहीं है, ख़ैर मैं मौक़ा देख कर दोनों को समझा दूँगी।''

अम्मी को आज मौक़ा मिल गया था। रबीआ भी मुन्ने को कमरे में सुला रही थी और समीना (छोटी बहू) अपने मायके गई थी।

अम्मीः ''बेटा चाय पियोगे?''

साक़िबः ''नहीं अम्मी! दोपहर में ऑफ़िस में पी ली थी और यह बाबा काफ़ी देर से दोस्त के पास गये हुए हैं?''

''हाँ बेटा वह कह कर गये थे कि कुछ देर हो जाएगी।''

अम्मीः ''तुम समीना को लेने जाओगे?''

साक़िबः ''हूँ... अम्मी खाना खाकर ही जाऊँगा...''

अम्मीः ''समीना भी अच्छी बच्ची है। शुक्र अल्लाह का कि दोनों बहुएं अच्छी हैं। (बेटे की तरफ़ देखते हुए) आने वाली बहू... का ख़याल रखना हम सब का ज़िम्मेदारी है क्योंकि वह अपने पीछे बहुत से रिश्ते छोड़ कर नये घर में आती है और वह भी बहुत सी उम्मीदों के साथ। उसको नये घर में एडजेस्ट करने में वक़्त लगता है। हो सकता है कि उसकी कोई बात हमें पसन्द न आए या हमारी बात उसे पसन्द न आए तो उसके लिए कोई ठीक तरीक़ा अपनाना चाहिए, न कि लड़ाई-झगड़ा।

साक़िबः ''अम्मी वह बड़ी... मेरा मतलब है कि ख़ुद ही बहाने-बहाने से लड़ाई शुरु कर देती है। मुझे भी ग़ुस्सा आ जाता है।''

''क्या सिर्फ़ ग़ुस्सा ही झगड़े को ख़त्म कर सकता है? नहीं मेरे बेटे! तुम्हारी भी किसी हद तक ग़ल्ती है।''

''अम्मी! एक बात बताइए! पापा भी तो इतना गुस्सा करते हैं मगर मैंने तो पलट कर आपको चीख़ते-चिल्लाते या जवाब देते नहीं देखा...।''

अम्मीः ''बहुत अच्छे बेटा... लेकिन मेरे बेटे! हर औरत तुम्हारी अम्मी की तरह नहीं होती और रही बात तुम्हारे बाबा की तो... उनमें... और दूसरी बहुत सारी अच्छाईयाँ हैं। मेरी ख़ामोशी और सब्र पर ख़ुद भी थोड़ी देर में नार्मल हो जाते हैं जैसे कोई बात ही नहीं हुई। मियाँ-बीवी में से एक को यह तरीक़ा ज़रूर इस्तेमाल करना चाहिए, जब ही गाड़ी आगे बढ़ती रहती है... अपने बिहेवियर और मोहब्बत में बैलेंस बनाएं। औरत टेढ़ी पसली की तरह होती है, ताक़त लगाओगे तो टूट जाएगी... बेटा! तुम समझदार हो इसलिए पसली टूटनी नहीं चाहिए। सख़्ती से नहीं प्यार से भी मामले सुलझाए जाते हैं... और तुम दोनों के इस तरह के बिहेवियर की वजह से हम सब... मेरा मतलब है कि हम सब तुम दोनों को ख़ुश देखना चाहते हैं। तुम दोनों के लड़ाई झगड़ों से हमें बड़ी तकलीफ़ होती है।''

साक़िबः ''सॉरी अम्मी... मेरी वजह से आप लोगों को परेशानी हो रही है लेकिन उसे भी तो समझाइए।''

''बिल्कुल! वह मेरे लिए बेटियों जैसी ही है। सही टाइम देखकर मैं उसे भी समझाऊँगी लेकिन तुम अपना तरीक़ा बदलो।''

*****

समीनाः ''अम्मी यह ख़ाला किसकी तलाक़ की बात कर रही थीं।''

अम्मीः ''उनकी बेटी को उसके शौहर ने तलाक़ दे दी है।''

समीनाः ''लेकिन क्यों ?''

अम्मीः (अम्मी को समीना को समझाने के लिए यह वक़्त ठीक लगा।) ''बस बेटा... मियाँ-बीवी में बर्दाश्त न हो तो यह नौबत आ ही जाती है। कुछ महीने पहले इरशाद ख़ाला ने मुझे बताया था कि उसकी बेटी शौहर और सास से लड़ कर घर आ गई है क्योंकि वह लोग उसका ध्यान नहीं रखते थे और ज़रा-ज़रा सी बात पर झगड़ा वग़ैरा होता रहता था। बेटा! मियाँ-बीवी का रिश्ता ऐसा है कि बर्दाश्त और समझदारी से काम लेना पड़ता है। ख़ास कर बेचारी औरत को ही ख़ुद को बदलना पड़ता है और समझौता करना पड़ता है। मर्द को मोहब्बत से ही कन्ट्रोल किया जा सकता है, न कि लड़-झगड़ कर। रिश्तों को मोहब्बत और बर्दाश्त जैसी अच्छाईयाँ ही मज़बूत बनाती हैं। वैसे भी मियाँ-बीवी तो हैं ही गाड़ी के दो पहिये, दोनों को एक-दूसरे का ध्यान रखना ही होता है। सामने वाला पहिया ''गड़गड़'' करे तो गाड़ी आगे कैसे बढ़ सकती है। अगर ख़ाला के दामाद की ग़लती थी तो उसकी बेटी की भी ग़लती है क्योंकि उसका भी बड़ा तेज़ मिज़ाज है और उसमें भी बर्दाश्त बिल्कुल नहीं है। इरशाद ख़ाला ने मुझे यह बात ख़ुद बताई है। बताओ अब गाड़ी आगे चले तो कैसे चले। वैसे भी बेटे! औरत को अल्लाह ने मोहब्बत के पानी से गूँधा है। उसमें समझौते, बर्दाश्त, सब्र जैसी अच्छाईयाँ मर्द से ज़्यादा होती हैं। जहाँ औरत इन अच्छाईयों को छोड़ दे वहाँ दूसरों के साथ-साथ उसकी अपनी ज़िन्दगी भी जहन्नम बन जाती है। हमारा दीन बड़ा प्यारा है, तभी तो हमारे दीन ने औरत की इन्हीं अच्छाईयों की वजह से उसका स्टेटस बढ़ा दिया है। शौहर के जितने राइट्स हैं औरत के भी उतने ही राइट्स हैं।''

समीना पढ़ी-लिखी लड़की थी। वह समझ गई कि सास इन-डायरेक्टली उसको नसीहत कर रही हैं लेकिन उसे सास का यह अन्दाज़ भला लगा कि वह डायरेक्टली उसे कुछ नहीं कह रही हैं...।

वह अपने कमरे में आई उसे लगा कि वह भी शौहर के साथ बुरा बर्ताव करती है जिस पर उसके शौहर का रीएक्शन भी सामने आता है। इसलिए उसे अपनी इस बुरी आदत का ध्यान रखना चाहिए और अपने बिहेवियर में नर्मी लाना चाहिए।

यह फ़ैमिली अपनी पाज़िटिव सोच की वजह से एक ''आइडियल फ़ैमिली'' कहलाई जाना चाहिए। कोई भी ज्वाइंट फ़ैमिली तभी एक मज़बूत फ़ैमिली बन सकती है जब उसमें पाज़िटिव सोच रखने, एक-दूसरे को बर्दाश्त करने, दूसरों की ग़लतियों को इग्नोर करने जैसी अच्छाईयाँ भी पाई जाती हों। सबसे बड़ी बात यह है कि अगर फ़ैमिली के बड़े समझदारी से काम लें तो फ़ैमिली की जड़ें बहुत मज़बूत हो जाती हैं। एक छत के नीचे रहने वालों को अपने राइट्स और अपनी ज़िम्मेदारियों की न सिर्फ़ जानकारी होना चाहिए बल्कि उन राइट्स और ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए भरपूर कोशिश भी करना चाहिए। नहीं तो एक छत के नीचे रहना मुश्किल हो जाता है। मैंने ऐसे बहुत से घरानों को बिखरते देखा है, जहाँ दूसरों के राइट्स को कुचल दिया जाता है या उन्हें इज़्ज़त और एहतेराम नहीं दिया जाता। जबकि रिश्ते पाज़िटिव सोच की वजह से ही बनते और मज़बूत होते हैं। कभी-कभी रिश्तों को जोड़े रखने के लिए उन चीज़ों को भी बर्दाश्त करना पड़ता है जिन्हें हम पसन्द नहीं करते।

■ आयतुल्लाह जाफ़र सुब्हानी

ख़ुदा ऐसा नहीं है

ख़ुदा के लिए दो तरह की सिफ़तें बताई जाती हैंः कुछ वह जो ख़ुदा की ज़ात में पाई जाती हैं जिन्हें ''सुबूती सिफ़तें'' कहा जाता है और कुछ वह जो ख़ुदा में नहीं पाई जातीं जिन्हें ''सल्बी सिफ़तें'' कहा जाता है।

इस बात को इस तरह भी कहा जा सकता है कि जब हम यह कहते हैं कि ख़ुदा के अन्दर यह कमाल पाया जाता है तो हम ''सुबूती सिफ़तों'' की बात करते हैं और जब हम यह कहते हैं कि ख़ुदा के अन्दर कमियाँ, बुराईयाँ और ऐब नहीं पाए जाते तो हम ''सल्बी सिफ़तों'' की बात करते हैं। (सुबूती सिफ़तें वह हैं जो अल्लाह में हैं और सल्बी सिफ़तें वह हैं जो अल्लाह के अंदर नहीं हैं।)

''सल्बी सिफ़तों'' की जब हम बात करते हैं तो असल में हम यह कहना चाहते हैं कि ख़ुदा के अन्दर कोई कमी, कोई बुराई और कोई ऐब नहीं पाया जाता क्योंकि बुराई या कमी उसमें पाई जाती है जो किसी चीज़ का मोहताज हो जाता है और ख़ुदा किसी चीज़ का मोहताज ही नहीं है, इसलिए उसमें कोई ऐब और कमी नहीं पाई जाती है। इसका मतलब यह निकलता है कि हर वह चीज़ जिस से ख़ुदा का मोहताज होना साबित होता हो उसे ख़ुदा की ज़ात से नहीं जोड़ा जा सकता।

उलमा कहते हैंः

1- ख़ुदा का जिस्म नहीं है,

2- ख़ुदा की कोई जगह नहीं है, यानी वह हर जगह है।

3- ख़ुदा किसी चीज़ के अन्दर नहीं समाता क्योंकि जो किसी के अंदर समाता है वह महदूद है और जो महदूद हो वह ख़ुदा नहीं है।

4- इसी तरह ख़ुदा के बारे में हमारा यह अक़ीदा है कि वह दिखाई नहीं देता क्योंकि दिखाई देने का मतलब यह होगा कि वह किसी ख़ास जगह पर है या वह अंधेरे में नहीं बल्कि रौशनी में है या उसके और देखने वाले के बीच एक दूरी पाई जाती है।

इस्लामी अक़ीदे के हिसाब से यह सारी चीज़ें इन्सानों और दूसरी चीज़ों के बारे में सोची जा सकती हैं लेकिन ख़ुदा के बारे में इस तरह की चीज़ें नहीं सोची जा सकतीं क्योंकि इन सारी बातों से ख़ुदा का मोहताज होना साबित होता है (जबकि वह किसी का मोहताज है ही नहीं)।

दूसरी बात यह कि अगर ख़ुदा दिखाई देगा तोः

(1) पूरे का पूरा दिखाई देगा।

(2) या पूरा दिखाई नहीं देगा और उसके बस कुछ ही हिस्से दिखाई देंगे।

अगर पूरा दिखाई देगा तो इसका मतलब यह होगा कि वह किसी एक ख़ास जगह में सिमटा हुआ है और महदूद (लिमिटेड) है।

अगर उसके कुछ हिस्से दिखाई देते हैं और

बाक़ी दिखाई नहीं देते तो इसका मतलब यह होगा कि ख़ुदा के कई हिस्से या टुकड़े हैं और वह उन हिस्सों या टुकड़ों से मिल कर बना है, जबकि यह दोनों बातें ख़ुदा से नहीं जोड़ी जा सकतीं।

इसलिए हमें यही मानना पड़ेगा कि वह नज़र नहीं आ सकता। हाँ! अगर कोई उसे देखना चाहे तो अपने दिल की आँखों से ज़रूर देख सकता है जिसका मतलब यह है कि इन्सान ख़ुदा और उसकी अज़मत को अपने दिल में महसूस कर सकता है।

इमाम अली[अ०] के एक सहाबी ज़अ्लब यमानी ने पूछाः क्या ख़ुदा को देखा जा सकता है ?

इमाम ने फ़रमायाः ''चेहरे की यह आँखें उसे नहीं देख सकती हैं लेकिन इन्सान दिल की आँखों और ईमान की हक़ीक़तों के ज़रिये उसे महसूस कर सकता है।''[1]

ख़ुदा को देखा नहीं जा सकता, यह एक ऐसी बात है जिसे अक़्ल अच्छी तरह से समझती है।

इसके अलावा क़ुरआन करीम ने भी साफ़ तौर पर हमें यही बताया हैः जब बनी इस्राईल की बार- बार ज़िद पर हज़रत मूसा[अ०] ने ख़ुदा को देखने की बात कही तो ख़ुदा ने कहा थाः

''तुम कभी मुझे नहीं देख सकते।''[2]

हो सकता है कि कोई यह कहे कि अगर ख़ुदा को नहीं देखा जा सकता तो फिर क़ुरआन क्यों एलान कर रहा हैः

''क़यामत के दिन कुछ चमकते हुए और खिले हुए चेहरे ख़ुदा की तरफ़ देख रहे होंगे।''[3]

इसका जवाब यह है कि यहाँ देखने का मतलब आँखों से ख़ुदा को देखना नहीं है बल्कि कहने का मतलब यह है कि लोग ख़ुदा की रहमत का इन्तेज़ार कर रहे होंगे। इस बात के सुबूत के तौर पर ख़ुद इसी आयत को पेश किया जा सकता हैः (1) पहली बात यह है कि देखने की बात चेहरों के लिए कही गई है और कहा गया हैः खिले हुए चेहरे देख रहे होंगे, अगर ख़ुदा को देखना मतलब होता तो देखने की बात आँखों के लिए होना चाहिए थी, न कि चेहरे के लिए। (2) दूसरी बात यह है कि इन आयतों में दो तरह के लोगों की बात की गई हैः कुछ वह लोग होंगे जिनके चेहरे खिले होंगे और वह ख़ुदा की रहमत को देख रहे होंगे और दूसरे वह लोग जो मुरझाए हुए होंगे और समझ रहे होंगे कि कमरतोड़ अज़ाब उनका इन्तेज़ार कर रहा है।

(सूरए क़यामत/25)

इन दो आयतों को मिलाकर देखा जाए तो पहली आयत का मतलब साफ़ हो जाता है कि दूसरी आयत उन लोगों के बारे में है जो देख रहे होंगे कि ख़ुदा का अज़ाब उनकी तरफ़ आने वाला है और पहली आयत उन लोगों के बारे में है जो ख़ुदा की रहमत को देख रहे होंगे।

5- क़ुरआन, हदीसों और मासूमीन की दुआओं में ख़ुदा के लिए कुछ ऐसी सिफ़तें बताई गई हैं जिन्हें उस तरह ख़ुदा के लिए बयान नहीं किया जा सकता, जिस तरह इन्सानों के लिए बयान किया जाता है। जैसेः

1- ख़ुदा का हाथ

''जो लोग आपकी बैअत करते हैं, वह असल में ख़ुदा की बैअत करते हैं और ख़ुदा का हाथ उनके हाथों पर है।''[4]

2- ख़ुदा का चेहरा।

''पूरब-पश्चिम ख़ुदा के लिए है, अब तुम जिधर भी मुड़ोगे ख़ुदा का चेहरा नज़र आएगा।''[5]

3- ख़ुदा की आँख।

''हमारी आँखों के सामने और हमारे हुक्म पर कश्ती बनाओ।''[6]

4- अर्श पर छाया हुआ।

''ख़ुदा अर्श पर छाया हुआ है।''[7]

इस तरह की और भी सिफ़तें हैं जो क़ुरआन ने ख़ुदा के साथ जोड़ी हैं लेकिन हमारी अक़्ल इन में से किसी भी सिफ़त को उस तरह ख़ुदा के साथ जोड़ने को तैयार नहीं हो पाती जिस तरह इन्सानों के साथ जोड़ती है क्योंकि अगर हम यह सिफ़तें ख़ुदा के साथ जोड़ देंगें तो फिर हमें यह

भी मानना होगा कि ख़ुदा जिस्म वाला है। फिर जिस्म वाला ही नहीं बल्कि इन्सानों और दूसरी चीज़ों जैसा भी मानना पड़ेगा जो अक़्ल, क़ुरआन और हदीस तीनों के मुताबिक़ सही नहीं होगा।

इसलिए इस तरह की सिफ़तों को समझने के लिए हमें क़ुरआन की सारी आयतों और हदीसों को देखना पड़ेगा, तब जाकर हम कोई सही मतलब समझ सकते हैं। साथ ही अगर अरबी ज़बान के हिसबा से भी देखा जाए तो हर ज़बान की तरह अरबी में भी सिम्बोलिक लफ़्ज़ें इस्तेमाल की जाती हैं यानी किसी लफ़्ज़ को उसके असली मायनी में इस्तेमाल करने के बजाए उस से कुछ और मतलब लिया जाता है जैसे इन आयतों में:

- ख़ुदा के हाथ का मतलब उसकी ताक़त है। हमारे बीच भी हाथ को ताक़त के सिम्बल के तौर पर पेश किया जाता है। ख़ुदा का हाथ उनके हाथ के ऊपर है, इसका मतलब यह है कि ख़ुदा उन सब से ऊपर है।

- चेहरा पर्सनॉलिटी और वुजूद का सिम्बल होता है। तुम जिधर मुड़ोगे उधर ख़ुदा का चेहरा पाओगे, इसका मतलब यह है कि ख़ुदा का वुजूद तुम्हें हर जगह नज़र आएगा। क़ुरआन मजीद क़यामत से पहले हर चीज़ के ख़त्म होने की ख़बर देते हुए कह रहा है कि हर चीज़ मिट जाएगी लेकिन ख़ुदा का चेहरा यानी ख़ुदा का वुजूद बाक़ी रहेगा।

- जनाबे नूह से कहा गयाः हमारी आँखों के सामने कश्ती बनाओ। आँख का मतलब यहाँ चेहरे की आँखें नहीं बल्कि मदद और हिफ़ाज़त है यानी नूह आप कश्ती बनाईये, हम आपकी मदद और हिफ़ाज़त करेंगे।

- इस आयत में अर्श का मतलब तख़्त और ''इस्तवा'' का मतलब किसी चीज़ पर छा जाना और उसे मुकम्मल कन्ट्रोल में लेना है। यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि ख़ुदा की हुकूमत हर जगह है और वह पूरी दुनिया पर छाया हुआ है।

1-नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/179, 2-सूरए आराफ़/143, 3-सूरए क़यामत/22, 4-सूरए फ़हत/10, 5-सूरए बक़रा/115, 6-सूरए हूद/37, 7-सूरए ताहा/5

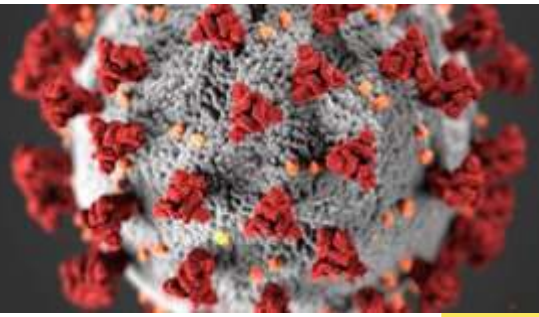

ख़ुदा के साथ कारोबार कीजिए

■ इब्ने हैदर मूसवी

इस दुनिया में रहते हुए भी जन्नत कैसे कमाई जा सकती है ?

अच्छे काम, लोगों के साथ अच्छाई, दूसरों की मदद... यही सब वह चीज़ें हैं जो इन्सान की आख़िरत बनाती हैं।

यह तौफ़ीक़ हर एक को नहीं मिलती, यह ख़ुदा की ख़ास इनायत होती है जो उसके ख़ास और अच्छे बन्दों को ही नसीब होती है और यह मदद ख़ुदा के अच्छे बन्दों के ज़रिये लोगों तक पहुँचती हैं।

कभी जिस्म के कुछ हिस्से सुन्न हो जाते हैं और किसी भी तरह के दर्द, ज़ख़्म या तकलीफ़ का एहसास नहीं करते। ऐसी ही हालत कभी-कभी इन्सान की रूह में भी पैदा हो जाती है। इन्सान अपने होने का एहसास ही खो बैठता है और वह दूसरे लोगों के दुख-दर्द और उनकी परेशानियों का एहसास नहीं कर पाता। यह वही हालत है जिसे दूसरों के दर्द को महसूस न कर पाने की हालत कहा जाता है और जो आदमी यहाँ तक पहुँच जाए उसे इन्सान नहीं कहा जा सकता।

जिस आदमी को दूसरों की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिल जाए तो समझ लीजिए कि उसके अन्दर अभी ज़िन्दगी का एहसास और इन्सानियत का दर्द पाया जाता है। ऐसा आदमी अपने इस काम से एक तरह की रूहानी ख़ुशी पाता है और ख़ुदा से क़रीब हो जाता है।

जो लोग हिम्मत करके अपने लिए तकलीफ़ और दूसरों के लिए आराम चाहते हैं, वह अपनी दौलत भी दूसरों के लिए ख़र्च कर देते हैं और इन्सानियत से क़रीब होते चले जाते हैं।

लेकिन ऐसा भी नहीं है कि जिसके पास भी दौलत हो, वह आसानी के साथ और शैतानी चालों से बचते हुए ख़ुदा के लिए अपनी दौलत लोगों के ऊपर ख़र्च कर दे।

यह काम करने वाले लोग ज़मीन के वह सितारे हैं जो आसमान वालों के लिए चमकते हैं। ऐसे लोग दूसरों के लिए ख़ुदा की हुज्जत हैं और ख़ुश नसीब हैं कि दुनिया में ख़ुदा के बन्दों के लिए, ख़ुदा की तरफ़ से मदद पहुँचाने का ज़रिया बनते हैं।

उधर जिन लोगों को दुनिया की ज़ंजीरों और दुनियाई रिश्तों ने इस तरह अपना ग़ुलाम बना लिया हो कि वह अपनी दौलत को ख़ुदा के रास्ते में और दूसरों के लिए ख़र्च नहीं कर सकते वह मालदार होने के बाद भी बेचारे और दुनिया ग़ुलाम हैं जो सिर्फ़ दिखने में आज़ाद हैं मगर कहीं से कहीं तक आज़ाद नहीं हैं।

ख़ुश नसीब हैं इस दौड़ में पहल करने वाले वह लोग जो ख़ुदा के बन्दों की ख़िदमत और लोगों की मदद करने के मैदान में अपने साथ दौड़ने वालों को पीछे छोड़कर दुनिया के ज़रिये आख़िरत ख़रीद लेते हैं और नेकियों व ख़ैरात के रजिस्टर में ज़्यादा से ज़्यादा नम्बर अपने लिए रजिस्टर करवा लेते हैं।

हमारे दीनी कल्चर, आयतों और हदीसों में ''इनफ़ाक़'' और ''एहसान'' के नाम से जो बातें कही गई हैं वह ''माल के ज़रिये जिहाद'' करने का ही नक़्शा खींचती हैं।

कभी-कभी हमे अपने किसी काम को देखकर लगता है कि हम उस काम में अपना पैसा लगा रहे हैं, लेकिन असल में हमें उसी काम से बहुत सा फ़ायदा मिल रहा होता है। बिल्कुल उस बीज की तरह जिसे किसान ज़मीन में बो देता है और बदले में कई गुना पाता है या जैसे कोई बैंक में जाकर अपने पैसे जमा करवा देता है कि वक़्त पड़ने पर निकाल लिया जाएगा। दिखने में तो वह आदमी बैंक को अपने पैसे दे रहा होता है लेकिन असल में वह उसके अकाउन्ट में जमा हो रहे होते हैं।

दीन की नज़र में ''इनफ़ाक़'' कुछ ऐसा ही है यानी ख़ुदा के साथ ऐसा कारोबार करना जिसमें हमारा ही फ़ायदा है और इसके ज़रिये हमारज्ञ ही माल ज़्यादा होता है।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः ''जब भी ज़िन्दगी में मुश्किलें बढ़ जाएं तो सदक़ा देकर ख़ुदा से कारोबार कर लो।''

एक जगह हज़रत अली[अ०] ने दुनिया को ख़ुदा के साथ बन्दों का कारोबार का बाज़ार बताया है।

ख़ुदा से कारोबार का एक रास्ता सदक़ा देना, इनफ़ाक़ करना और दूसरों की मदद करना है जिसके नतीजे में इन्सान ख़ुदा की तरफ़ से कई गुना सवाब पाता है।

एक जगह हज़रत अली[अ०] वसिय्यत करते हुए फ़रमाते हैं: ''इन ख़त्म हो जाने वाले दिनों में बाक़ी रहने वाले दिनों के लिए कुछ सामान इकट्ठा कर लो क्योंकि तुम्हारा रास्ता बिल्कुल साफ़ है और तुम सफ़र के लिए तैयार हो, जिसे आख़िरत के लिए बनाया गया है और उसका माल बहुत जल्द उस से अलग होने वाला है, वह उस माल से क्या करना चाहता है ?''

इन्सान माल छोड़ कर चला जाता है लेकिन उसे पता होना चाहिए कि उसे उस माल और उस माल से पड़ने वाले हर असर या नतीजे का हिसाब ख़ुदा के सामने देना है। क्या बेहतर नहीं है कि वह यहीं पर इनफ़ाक़ और ख़ैरात के ज़रिये, ख़ुदा के यहाँ कुछ माल जमा कर दे और जब उसे ज़रूरत हो तो वहाँ ख़ुदा से से ले ले ?माल ख़त्म होने वाला है... जब तक हाथ से गया नहीं है। इनफ़ाक़ के ज़रिये हम उसे बर्बाद होने से बचा सकते हैं और हमेशा के लिए बचा सकते हैं।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

''जब मौत आती है तो इन्सान को या तो बेचारा बना देती है या कामयाब। इसलिए दुनिया से बेहतरीन सामान उठा कर ख़ुद को आख़िरत के अज़ाब से बचा लेना चाहिए।''

एक जगह हज़रत अली[अ०] यह भी फ़रमाते हैं: ''बेहतरीन सामान के साथ दुनिया से सफ़र करो।''

इस एंग्ल से देखने के बाद अब आप ही बताइए कि सदक़ा और इनफ़ाक़ इन्सान को कामयाबी की गारण्टी देता है या नाकामी की ? यह फ़ायदा है या नुक़सान ?खोना है या पाना ?

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं कि आख़िरी ज़माने में ऐसे लोग आएंगे जो उस ज़माने में सदक़े को घाटा और नुक़सान समझेंगे।

इसकी वजह यह है कि उन्होंने अपनी आँखों पर आख़िरत को देखने वाला चश्मा नहीं लगा रखा होगा और ख़ुदा की राह में इनफ़ाक़ के असर और बरकतों से बेख़बर होंगे, उन्हें ख़ुदा के वादों पर पक्का ईमान नहीं होगा और इसी लिए वह ख़ुदा के साथ कोई कारोबार नहीं कर सकेंगे।''

ख़ुदा की राह में ख़र्च करना एक ऐसा इन्वेस्मेन्ट है जिसमें फ़ायदा ही फ़ायदा है। यहाँ इन्सान कारोबार ख़ुदा के साथ करता है जिसने यह वादा किया है कि जो भी उसकी राह में ख़र्च किया जाएगा, वह उसका कई गुना लौटाएगा। वह भी उन सख़्त हालात में जब इन्वेस्ट करने वाले को उसके इन्वेस्मेन्ट और उसके फ़ायदे की बहुत ज़रूरत होगी, यानी आख़िरत में कि जब कोई किसी के काम नहीं आएगा और हर एक को अपनी पड़ी होगी।

इसलिए जो आदमी दूसरों के साथ नेकी करता है, असल में वह ख़ुद अपने ही लिए नेकी कर रहा होता है क्योंकि इस नेकी (इनफ़ाक़) का फ़ायदा उसी की तरफ़ पलटता है, चाहे दुनिया में पलटे या आख़िरत में।

अगर कोई चाहता है कि उसके दुनिया से गुज़र जाने के बाद उसके पीछे रह जाने वालों, फ़ैमिली और बच्चों के साथ अच्छा किया जाए तो इसका रास्ता भी यही है यानी वह दूसरे मोहताजों और ज़रूरतमन्दों का ख़याल रखे ताकि दूसरे भी उसकी औलाद के साथ वैसा ही सुलूक करें।

हज़रत अली[अ०] इस समाजी क़ानून की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं:

''दूसरों के घर वालों का ध्यान रखो ताकि दूसरे भी तुम्हारे घर वालों का ध्यान रखें।''

जब इन्सान इस दुनिया से उठ जाता है और दुनिया के माल से उसका कंट्रोल छिना जाता है तो वह अपने हाथ मलता रह जाता है कि काश! कुछ दिन और दुनिया में होता और अपनी क़ब्र के लिए कुछ आराम का सामान कर लेता और अपने रिश्तेदारों से उम्मीद न लगाता कि वह मेरे लिए कोई नेकी और चेरिटी करेंगे।

इस अफ़सोस से एक ही चीज़ इन्सान को बचा सकती है और वह यह है कि जब तक वह इस दुनिया में है अपने लिए वही करे जिसकी उम्मीद अपने चले जाने के बाद अपने घर वालों से लगाए बैठा है। इसका रास्ता बस यही है कि वह ख़ुदा की नेमतों को आख़िरत की नेमतों में बदल कर आख़िरत के घर को आबाद कर ले।

कोरोना से जूझ रहे इन हालात में हमारे पास बेहतरीन मौक़ा है ख़ुदा के साथ कारोबार करने का। ख़ुदा हम से क़र्ज़ माँग रहा है लेकिन अपने लिए नहीं बल्कि बन्दों के लिए। ख़ुदा हम से हमारी दौलत का कुछ हिस्सा माँग रहा है लेकिन ज़रूरत उसे नहीं बल्कि उसके बन्दों को है।

क़यामत के दिन ख़ुदा की एक शिकायत यह भी होगी कि उसके बन्दों ने उसे कपड़ा नहीं दिया, खाना नहीं दिया या उसकी ज़रूरतों को पूरा नहीं किया। बन्दा हैरान होकर पूछेगा कि ऐ ख़ुदा! तुझे इन चीज़ों की कब ज़रूरत थी, तू तो ख़ुद हमें देने वाला था। ख़ुदा जवाब देगा कि मेरे बन्दों को ज़रूरत थी लेकिन तुम ने उन्हें नहीं दिया। मेरे बन्दे ही मेरा सब कुछ हैं।

हमारे आसपास शायद बहुत से भूखे हों जिनके पास दो वक़्त की रोटी भी न हो, बहुत से ऐसे भी हों जिनके पास पहनने को कपड़ा न हो, बहुत से बीमार हों जिनके पास दवाई-इलाज के लिए पैसा न हो, बहुत से बच्चे हों जो पढ़ाई करना चाहते हैं लेकिन स्कूल की फ़ीस और पढ़ाई का ख़र्चा उनके पास न हो, बहुत से यतीम हों जिनका कोई पूछने वाला न हो।

ख़ुदा ने हमारी दौलत में उन सब का हिस्सा रखा है। हमारी दीनी ड्यूटी है कि हम उनका हिस्सा उन तक पहुँचाएं।

सवाल यह नहीं कि हमारे पास कितना हैं, बल्कि बात यह है कि जितना भी है उसमें से जो भी हम दे सकते हैं वह दे रहे हैं या नहीं ? इसका जवाब हमें ख़ुदा के सामने भी देना है। ●

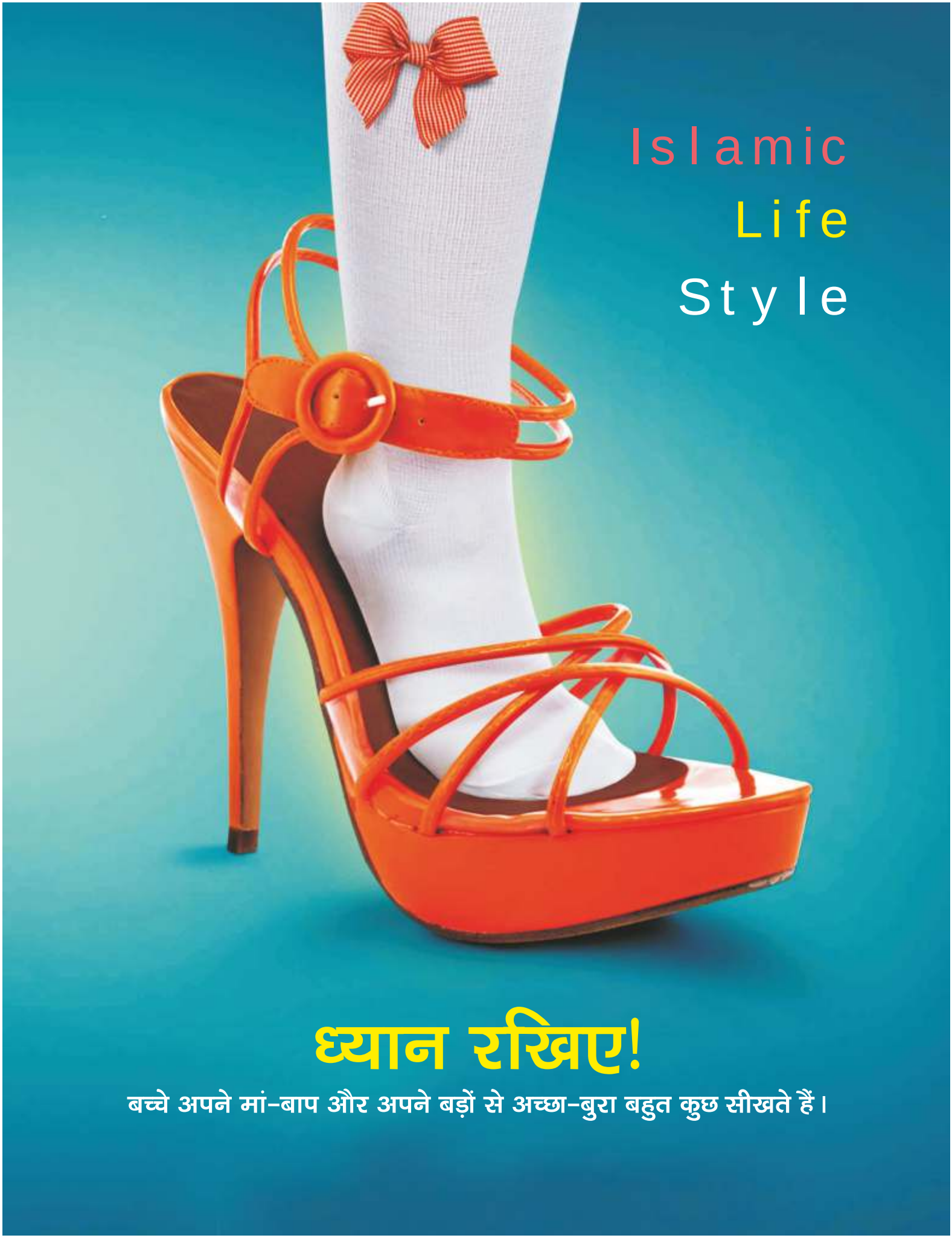

ध्यान रखिए!

बच्चे अपने मां-बाप और अपने बड़ों से अच्छा-बुरा बहुत कुछ सीखते हैं।

शहरयार का मशहूर क़सीदा

ईरान के इस मशहूर शायर का असली नाम सैय्यद मोहम्मद हुसैन है लेकिन शायरी की दुनिया में ''उस्ताद शहरयार'' के नाम से जाने-पहचाने जाते हैं। इनका एक पूरा दीवान (शायरी की किताब) है। इस दीवान में बहुत से शेर और क़सीदे अहलेबैत[अ०] और इमाम अली[अ०] की शान में लिखे गये हैं। उनमें से एक क़सीदे के बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं। इस क़सीदे के शेरों में शहरयार ने विलायत का मीठा रस घोल दिया है और बड़ी ही ख़ूबसूरत शायरी की है।

इस क़सीदे की पहली लाइन-

''अली ऐ हुमाए रहमत तू चे आयती ख़ुदा रा''

हम यहाँ आपके सामने शहरयार का यह पूरा क़सीदा नहीं सुनाना चाहते हैं बल्कि इसके पीछे जो एक अजीब, ताज्जुब में डाल देने वाली और ईमान को ज़िन्दा करने वाली हक़ीक़त है, उस पर बात करना चाहते हैं।

बात कुछ इस तरह से है कि एक दिन लम्बे क़द वाला एक आदमी क़ुम शहर में आयतुल्लाह मरअशी के पास आया। सलाम-दुआ के बाद आयतुल्लाह मरअशी एक किताब पढ़ने लगे। फिर कुछ देर के बाद उस आदमी की तरफ़ देखने लगे। कुछ सेकेण्ड उसकी तरफ़ देखते रहे और अपनी जगह से उठे, फिर मुस्कुराते हुए खड़े होकर अपने मेहमान को गले लगा लिया। फिर कहा, ''शहरयार साहब! दिल की गहराईयों से आपको मेरा सलाम! मुबारक हो! बहुत मुबारक हो!'' शहरयार ने ताज्जुब और घबराहट में आयतुल्लाह मरअशी का हाथ चूमना चाहा लेकिन आयतुल्लाह मरअशी ने अपना हाथ पीछे की तरफ़ खींच लिया और अपने मेहमान को फिर से गले लगा लिया। इतना ही नहीं बल्कि अपने मेहमान की पेशानी भी चूमने लगे। फिर शहरयार को अपनी दायीं तरफ़ बिठा लिया। आयतुल्लाह मरअशी अदब के साथ अपने घुटनों पर बैठ गए। इस बीच शहरयार आयतुल्लाह मरअशी से बातचीत करते हुए कहने लगे कि आपकी तरफ़ से मैसेज मिलते ही मैं तबरेज़

■ शहीद आयतुल्लाह बेहिश्ती

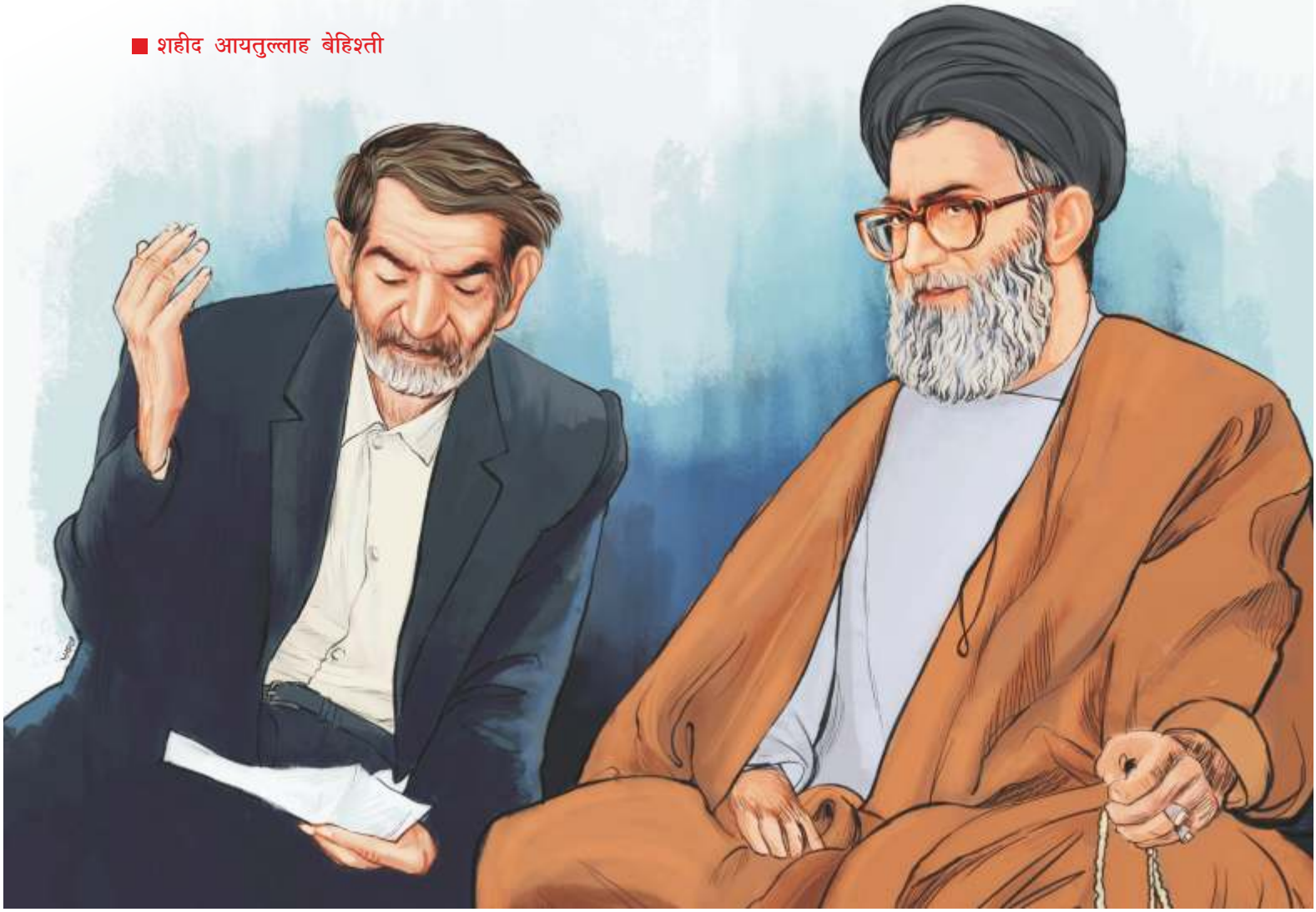

से क़ुम की तरफ़ चल पड़ा था लेकिन रास्ते में यह सवाल मेरे दिमाग़ में बार-बार उठता रहा कि आप मुझे आख़िर जानते कैसे हैं? हम दोनों ने कभी एक-दूसरे को देखा तक नहीं है और न ही इस से पहले हमारा एक- दूसरे से कोई रिश्ता-नाता रहा है।

आयतुल्लाह मरअशी ने अपने मेहमान की तरफ़ चाय बढ़ाते हुए पूछाः क्या आपका कोई क़सीदा ऐसा भी है जिसकी पहली लाइन इस तरह से है कि-

''अली ऐ हुमाए रहमत तू चे आयती ख़ुदा रा''

शहरयार को पहले से ज़्यादा ताज्जुब हुआ मगर उन्होंने हाँ में सर हिलाकर देते हुए कहाः आज तक मैंने यह क़सीदा किसी को नहीं सुनाया और न ही इस क़सीदे के बारे में किसी को कभी कुछ बताया है। मेरे ख़याल में इस क़सीदे के बारे में ख़ुदा और मेरे अलावा कोई नहीं जानता।

आयतुल्लाह मरअशी ने पूछा, ''मुझे खुलकर बताईये कि आप ने यह क़सीदा कब और किस वक़्त लिखा था?''

शहरयार ने कुछ देर अपना सर झुकाए रहने के बाद और अच्छी तरह सोचने के बाद कहा, ''आज से ठीक एक हफ़्ता पहले आज ही की रात मैंने यह क़सीदा कहा था। उस रात पहले मैंने वुज़ू किया था और रात में उस वक़्त यह क़सीदा कहा था जब मैं बिल्कुल अकेला था। उस रात मेरी बड़ी अजीब सी हालत थी। मैं इमाम अली[अ०] की मोहब्बत में डूबा हुआ था और इश्क़े अली[अ०] में झूम रहा था। रात को लगभग 3 बजे के बाद मैंने यह क़सीदा कहा था।''

यह सुनने के बाद आयतुल्लाह मरअशी की आँखों से आँसू बहने लगे और सर हिलाते हुए कहा, ''ठीक है। आप बिल्कुल सच कह रहे हैं। ऐसा ही हुआ है और यही वक़्त और यही रात थी।''

शहरयार बड़े परेशान हुये और पूछने लगेः ''उस रात और उस वक़्त क्या हुआ था? आपकी बात ने मुझे परेशान कर दिया है।''

आयतुल्लाह मरअशी ने कहा, ''उस रात मैं काफ़ी देर तक नहीं सोया था और जाग रहा था। नमाज़े शब और दुआए तवस्सुल के बाद मैंने ख़ुदा से दुआ की और कहा कि ऐ ख़ुदा! आज मुझे ख़्वाब में अपने किसी ख़ास बन्दे से मिला दे। मेरी आँख लग गई तो मैंने देखा कि मस्जिदे कूफ़ा के किसी कोने में बैठा हुआ हूँ। हज़रत अली[अ०] मस्जिद में हैं और सहाबियों ने उनको घेरे में ले रखा है जैसे चाँद के चारों तरफ़ सितारों का झुरमुट होता है। उन सहाबियों को मैं नहीं पहचानता। शायद सलमान, अबूज़र, मिक़दाद, मीसम, मालिके अश्तर, हुज्र बिन अदी और मोहम्मद बिन अबीबक्र वग़ैरा होंगे। मुझे ऐसे लग रहा था कि कोई ख़ुशी का दिन है। इमाम अली[अ०] ने दरवाज़े पर खड़े गार्ड से कहाः शायरों को अन्दर बुलाया जाए। सबसे पहले अरब शायर आए। इमाम अली[अ०] उनकी तरफ़ मोहब्बत भरी नज़रों से देखने लगे। फिर फ़ारसी शायरों को बुलाया गया। मोहतशिम काशानी और दूसरे फ़ारसी शायरों की तरफ़ हज़रत अली[अ०] ने देखा और एक-एक को देखते गये। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ख़ास शायर को ढूँढ रहे हों लेकिन वह वहाँ मौजूद नहीं था। तीसरी बार इमाम अली[अ०] ने कहाः मेरे शहरयार को बुलाओ!

जैसे ही इमाम अली[अ०] ने यह हुक्म दिया, फ़ौरन ही आप वहाँ आ गये।

यही वह था जब पहली बार मैंने आपको देखा था और आज रात जब मैंने आपको देखा तो फ़ौरन पहचान लिया कि आप वही शहरयार हैं। आप अपनी क़द्र जानिये! आप पर हज़रत अली[अ०] की ख़ास नज़र है।

यह सुन कर उस्ताद शहरयार की आँखों से आँसू टपकना शुरु हो गये। काफ़ी देर के बाद इमाम अली[अ०] की मोहब्बत में निकलने वाले आँसू कुछ थमे तो आयतुल्लाह मरअशी ने कहाः आप बड़े अदब से इमाम अली[अ०] के पास बैठे हुए थे। इमाम अली[अ०] ने जब आप से कहा कि शहरयार! अपने शेर सुनाओ! जब आपने अपने शेर पढ़ना शुरु किये तो आपका पहला शेर यह था-

''अली ऐ हुमाए रहमत तू चे आयती ख़ुदा रा''

आयतुल्लाह मरअशी ने शहरयार से कहा कि ऐ शहरयर! यह क़सीदा मुझे भी सुनाईये।

उस्ताद शहरयार ने अपना क़सीदा पढ़ना शुरु कर दियाः

(इस क़सीदे के सिर्फ़ दो शेर हम यहाँ पेश कर रहे हैं।)

''ऐ ख़ुदा की रहमत के परिन्दे! आप ख़ुदा की एक बहुत बड़ी निशानी हैं और दुनिया की हर चीज़ पर आपका साया फैला हुआ है।''

''ऐ दिल! अगर तू ख़ुदा को पहचानना चाहता है तो अली[अ०] के चहरे की तरफ़ देख क्योंकि ख़ुदा की क़सम! मैंने अली[अ०] के ज़रिये ही ख़ुदा को पहचाना है।''

क्या मिट्टी से खेलना ख़तरनाक है ?

क्या आप सफ़ाई-सुथराई को अहमियत देती हैं और समझती हैं कि आपके बच्चों को भी धूल-मिट्टी से दूर रहना चाहिए, अगर हाँ तो आप अपने बच्चों के साथ दुश्मनी कर रही हैं।

कुछ रिसर्चेस से यह साबित हुआ है कि आज का इन्सान 'पुराने ज़माने यानी मिडिल ऐजेज़ के इन्सानों से ज़्यादा कमज़ोर इसलिए है क्योंकि आज के इन्सान ने मिट्टी से अपना रिश्ता ख़त्म कर दिया है।

हमारे समाज के बड़े कहा करते थे कि बच्चों को मिट्टी में खेलने से मत रोको क्योंकि इस से हेल्थ अच्छी रहती है लेकिन बहुत से पैरंट्स ऐसा करने से कतराते थे क्योंकि वह इसे कोई अच्छा काम नहीं समझते थे और उनका मानना था कि इस से बच्चों को बीमारियाँ लगने के ख़तरे बढ़ जाते हैं।

अब नई रिसर्चेस ने साबित कर दिया है कि बड़े-बूढ़ों के ज़रिये हम तक पहुँची बहुत सी बातें असल में सदियों के तजुर्बों का निचोड़ होती हैं, चाहे वह उन बातों की साइंस न जानते हों लेकिन इन्सानी ज़िन्दगी के सिस्टम को अच्छी तरह समझते हैं।

मिट्टी में खेलने के फ़ायदे

रिसर्चेस के मुताबिक़ मिट्टी में खेलने और उसके साथ टाइम बिताने से हमारे जिस्म का इम्यून सिस्टम बहुत मज़बूत हो जाता है और जिस्म को बैक्टीरिया या जर्म्स से लड़ने की अनोखी ताक़त मिलती रहती है।

इस बात को यूँ भी कहा जा सकता है कि मिट्टी में वक़्त बिताने से हमारे जिस्म को बहुत सी बीमारियों से लड़ने की ताक़त मिल जाती है और हम बहुत सी बीमारियों से बचे रहते हैं।

एक और हैरान कर देने वाला फ़ायदा जो सामने आया है वह यह है कि मिट्टी में वक़्त बिताना दिमाग़ में सेरोटोनिन की मिक़दार बढ़ा देता है जो नर्वस सिस्टम को मज़बूत बनाने में बहुत कारगर होता है, जिस से जिस्म काफ़ी एक्टिव होता और हमारे अंदर फ़ैसला लेने की एनर्जी पैदा हो जाती है।

हमारा जिस्म कई बार तरह-तरह की एलर्जी का शिकार हो जाता है मगर मिट्टी में खेलने से एलर्जी को ख़त्म करने में काफ़ी मदद मिलती है और हमारे अंदर कई तरह की एलर्जी से लड़ने की ताक़त पहले से ज़्यादा हो जाती है।

बहुत सी दूसरी चीज़ों की तरह हमारा मिज़ाज भी हमें दूसरे जानदारों से अलग करता है, मिट्टी में खेलने से मिज़ाज को बेहतर बनाने में बहुत मदद मिलती है जिसकी वजह से तनाव पैदा करने वाले सेल्स को काफ़ी सुकून मिलता है।

कुछ साइंसी रिसर्चेस के मुताबिक़ बहुत ज़्यादा साफ़-सुथरा माहौल या हमारे आसपास का नेचर हमारे जिस्म के इम्यून सिस्टम को कमज़ोर बना देता है, कई तरह की एलर्जी पैदा कर देता है और अपने साथ मोटापा भी ले आता है।

आमतौर पर देखा गया है कि हमारे समाज में ज़्यादा लोग जर्म्स को लेकर परेशान रहते हैं और उन्हें ख़त्म करने वाली दवाईयों और साबुन वग़ैरा पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देते हैं लेकिन दूसरी तरफ़ यही साबुन हमारी स्किन पर मौजूद उन जर्म्स को भी ख़त्म कर देते हैं जो बीमारियों से लड़ने के काम आते हैं।

तो फिर घबराईये मत! अपने बच्चों को घर से बाहर निकलने दीजिए ताकि वह ताज़ा हवा में साँस ले सकें और मिट्टी में खेल कर ख़ुद को हेल्थी रख सकें। उनके साथ कुछ देर खेल कर आप को भी सुकून मिलेगा और कुछ ही दिन में आप देखेंगी कि आपकी सेहत भी अच्छी हो रही है। ●

■ हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी

मोहब्बत ही दीन है

अपने मक़सद को पाने के लिए हम ताक़त और धौंस का इस्तेमाल भी करते हैं लेकिन अगर अपने मक़सद तक पहुँचने के लिए मोहब्बत से काम लिया जाए और दिलों में एक तरह का एट्रेक्शन पैदा किया जाए तो उसका असर ज़्यादा और देर तक बाक़ी रहने वाला होता है। हदीस में भी आया है:

''मोहब्बत डर से बेहतर है।''[1]

अहलेबैत[अ०] से हमारे रिश्ते की बुनियाद क्या है और इस रिश्ते को किस फ़ाउंडेशन पर आगे बढ़ना चाहिए ?

क्या यह किसी स्टेट के गवर्नर और वहां की पब्लिक या किसी बादशाह और आम लोगों के बीच पाये जाने वाले रिश्ते जैसा रिश्ता है ?

या टीचर और स्टूडेंट के बीच सीखने और सिखाने की वजह से पैदा होने वाले रिलेशन की तरह है ?

या यह रिश्ता वह मोहब्बत और मवद्दत का है जिसका ताल्लुक़ दिल और रूह से है ? जिस में असर भी होता है, देर तक रहने वाली भी होती है और गहरी भी।

क़ुरआन करीम ने इस रिश्ते को यानी अहलेबैत[अ०] की मवद्दत को ''अज्रे रिसालत'' का नाम दिया है:

''कह दीजिए कि मैं तुम से अपनी रिसालत की इस तबलीग़ का कोई अज्र (बदला) नहीं चाहता। बस यह चाहता हूँ कि मेरे क़राबतदारों (मेरे अहलेबैत[अ०]) से मोहब्बत करो।''[2]

ज़ाहिर है कि सबसे अफ़ज़ल मोहब्बत भी वही होगी जिसका हुक्म ख़ुदा ने दिया हो। इसी लिए जो लोग यह मोहब्बत रखते हैं ख़ुदा भी उन से मोहब्बत करता है।

हदीसों में मवद्दत और विलायत को ख़ुदा की तरफ़ से वाजिब किया जाने वाला एक रिश्ता और आमाल व इबादतों के क़ुबूल होने की कसौटी बताया गया है। अहलेसुन्नत भी इस बात को मानते हैं। अहलेसुन्नत के मशहूर इमाम शाफ़ई का शेर है:

ऐ अल्लाह के रसूल[स०] के अहलेबैत! आपकी मोहब्बत ख़ुदा ने वाजिब की है जिसका ज़िक्र उसने क़ुरआन में क्या है। आपकी अज़मत के लिए यही काफ़ी है कि जो भी (नमाज़ में) आप पर दुरूद न भेजे उसकी नमाज़ सही नहीं है।[3]

अहलेबैत[अ०] से मोहब्बत और दिल में पैदा होने वाले इस रिश्ते के नतीजे में अहलेबैत[अ०] के चाहने वाले गुमराहियों से भी बचे रहते हैं। साथ ही यह रिश्ता दीन के असली और प्योर सोर्स की तरफ़ ले जाने वाला रास्ता भी है। इसी लिए अल्लाह के रसूल[अ०] ने फ़रमाया है कि लोगों के बीच अहलेबैत[अ०] की मोहब्बत फैला दो और इस मोहब्बत की बुनियाद पर ही अपने बच्चों की परवरिश करो। हदीस यूँ हैं:

''अपने बच्चों की परवरिश मेरी, मेरे ख़ानदान की और क़ुरआन की मोहब्बत पर करो।''[4]

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने भी फ़रमाया है:

''ख़ुदा उस आदमी पर रहमत करे जो लोगों के बीच हमारी मोहब्बत को फैलाए, उनकी नज़र में हमें ऐसा न बनाए कि वह हम से दूर भागने लगें।''[5]

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने यह भी फ़रमाया है: ''लोगों की नज़र में हमें ऐसा बनाओ कि वह हम से

मोहब्बत करें। उनकी नज़र में हमें ऐसा न बनाओ कि वह हम से नफ़रत करें। हर एक की मोहब्बत को हमारी तरफ़ खींचो और हम से जोड़ी जाने वाली हर बुराई से हमें बचाओ।''[6]

मोहब्बत और दिल का रिश्ता जितना गहरा होगा उतनी ही अहलेबैत[अ०] की बातें मानने का जज़्बा बढ़ेगा। यह बिल्कुल सामने की चीज़ है कि लोग जिन हस्तियों से मोहब्बत करते हैं उन्हीं को अपना आइडियल बनाते हैं।

अपने इमामों से इमोश्नल मोहब्बत हमें पॉलिटिकल और सोशल मैदान में उनका हुक्म मानने पर उभारती है। यह मोहब्बत सिर्फ़ नाम के लिए और ख़ुद को कुछ साबित करने के लिए नहीं होती बल्कि यह मोहब्बत हमें इश्क़ और अक़ीदत भरी पैरवी की तरफ़ ले जाती है।

इसलिए क़ुरआन और हदीस में है कि अहलेबैत[अ०] के साथ शियों का रिश्ता सिर्फ़ अक़ीदे की बुनियाद पर नहीं होना चाहिए बल्कि इमोश्नल और रूहानी भी होना चाहिए। हमें चाहिए कि हम अपनी अक़्ल व सोच को अपने इमोशंस के साथ मिलाएं और अक़्ल व मोहब्बत को एक-दूसरे से जोड़ दें। बिल्कुल ऐसे ही जैसे स्कूल-कॉलेज में अगर टीचर का अपने स्टूडेन्ट से रिश्ता ज़्यादा इमोश्नल और मोहब्बत भरा होता है तो स्टूडेन्ट दिल लगाकर पढ़ाई करता है।

इमामों[अ०] के साथ मोहब्बत भरे इस रिश्ते में भी यही होना चाहिए कि दिल पर हमारे इमामों की ही हुकूमत हो। जब ऐसा होगा तो मारेफ़त, मोहब्बत और इताअत के बीच एक मज़बूत रिश्ता बन जाएगा। मारेफ़त, मोहब्बत को जन्म देती है और मोहब्बत सामने वाले के पीछे-पीछे चलने का ज़रिया बन जाती है।

अल्लाह के रसूल[स०] की एक हदीस में इन तीन चीज़ों की तरफ़ इशारा किया गया है:

''आले मोहम्मद[अ०] की मारेफ़त जहन्नम से दूरी और निजात की गारंटी है। आले मोहम्मद[अ०] की मोहब्बत पुले सिरात से गुज़रने का पास है और आले मोहम्मद[अ०] की विलायत अज़ाब से बचने का ज़रिया है।''[7]

इस रिश्ते को कुछ इस तरह से समझा जा सकता है:

पहले मारेफ़त - फिर मोहब्बत - फिर इताअत

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की एक हदीस में भी आया है कि:

'' मारेफ़त, मोहब्बत को जन्म देती है।''[8]

अगर अल्लाह के रसूल[स०] की ज़िन्दगी को सामने रखा जाए तो भी यही समझ में आता है कि जो भी मारेफ़त की बुनियाद पर आपसे क़रीब होता था उसके दिल में आपकी मोहब्बत अपने आप पैदा हो जाती थी।[9]

दूसरों ख़ासकर बच्चों में अहलेबैत[अ०] की मोहब्बत पैदा करने के लिए छोटी-छोटी सी चीज़ों से शुरुआत करना चाहिए और बाद की स्टेजेस में मारेफ़त को बढ़ाते हुए मोहब्बत के इस रिश्ते को गहरा करना चाहिए और इस रिश्ते को इतना करना चाहिए कि ''मोहब्बत'' ख़ुद इन्सान का ही एक अटूट हिस्सा बन जाए। यानी ''अहलेबैत[अ०] की मोहब्बत'' हर मुसलमान और हर शिया के दीन का हिस्सा बन जाए।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है:

''क्या मोहब्बत के अलावा भी दीन किसी और चीज़ का नाम है?''[10]

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं:

''दीन ही मोहब्बत है और मोहब्बत ही दीन है।''[11]

सच्ची मोहब्बत इन्सान को इमामों से क़रीब करती है और फिर इन्सान अपने आप इमामों के बताए रास्ते पर चल पड़ता है जहाँ न गुनाह होते हैं और न बुराईयाँ।

हमें इस बात का भी ज़रूर ध्यान रखना चाहिए कि लोगों के दिलों में अहलेबैत[अ०] की मोहब्बत डालने के लिए उनके दिलों की हालत क्या है और उनके दिल इस मोहब्बत को संभालने के लिए कितने तैयार हैं क्योंकि अहलेबैत[अ०] की मोहब्बत उन दिलों में जगह नहीं बनाती है जो दिल इस मोहब्बत का बोझ न उठा सकते हों यानी जिनके दिल की ज़मीन इस मोहब्बत का बीज बोने के लिए तैयार न हो उनके दिल में यह पौधा बड़ा नहीं हो सकता जैसे सख़्त चिकने पत्थर पर कभी भी पानी नहीं ठहरता और पथरीली ज़मीन पर भी कुछ नहीं बोया जा सकता।

1-बिहारुल अनवार, 75/226, 2-सूरए शूरा/23, 3-अल-ग़दीर, 2/303, 4-अह्क़ाकुल हक़, 18/498, 5-बिहारुल अनवार, 75/348, 6-बशारतुल मुस्तफ़ा/222, 7-यनाबीउल मवद्दत, 1/87, 8-बिहारुल अनवार, 68/22, 9-बिहारुल अनवार, 16/190, 10-मीज़ानुल हिकमत, 2/215, 11-बिहारुल अनवार, 66/238

बात जब मुबाहेला तक पहुँची

■ अब्दुल हुसैन बडगामी

हिजरत के बाद नवाँ साल है। मक्का और तायफ़ शहरों को मुसलमान जीत चुके हैं। यमन, ओमान और उसके आसपास की जगहें भी मुसलमान हो चुकी हैं। हिजाज़ और यमन के बीच नजरान नाम की एक जगह है जहाँ ईसाई रहते हैं। उत्तर अफ़्रीक़ा और रोम की ईसाई हुकूमतें इन नजरानी ईसाईयों को सपोर्ट करती हैं, शायद इसी वजह से उनमें तौहीद के झण्डे के नीचे आने का जज़्बा नज़र नहीं आता है लेकिन इन लोगों पर दुनिया के लिए रहमत बन कर आने वाले अल्लाह के रसूल[स०] काफ़ी मेहरबान हैं।

अल्लाह के रसूल[स०] नजरानी ईसाईयों के बड़े पादरी ''अबू हारसा'' के नाम ख़त भेजते हैं जिसमें ईसाईयों को इस्लाम लाने का न्योता दिया जाता है। अल्लाह के रसूल[स०] की मोहर लगा हुआ यह लेटर एक डेलीगेशन के साथ नजरान भेजा जाता है।

जब मदीने से अल्लाह के रसूल[स०] का लेटर नजरान पहुँचता है तो वहाँ का बड़ा पादरी अबू हारसा लेटर खोल कर बड़े ध्यान के साथ पढ़ने लगता है और कुछ सोचने लगता है। शरजील जिसे काफ़ी समझदार और चालाक समझा जाता था, उसे भी बुलवाया जाता है। इसके अलावा वहाँ के दूसरे बड़ों और समझदारों को भी वहाँ आने के लिए कहा जाता है।

सभी लोग इस लेटर के बारे में बात करने लगते हैं। इसका नतीजा यह निकलता है कि साठ लोगों का एक डेलीगेशन हक़ीक़त को समझने के लिए मदीना भेजा जाता है जिसमें अबू हारसा और बड़े पादरी भी शामिल होते हैं।

नजरान का यह डेलीगेशन बड़ी शान के साथ बादशाहों जैसे कपड़े पहने मदीने पहुँचता है। वह लोग अल्लाह के रसूल[स०] के घर का पता पूछते हैं। बताया जाता है कि अल्लाह के रसूल[स०] इस वक़्त अपनी मस्जिद में हैं।

नजरान वाले मस्जिद के अन्दर आ जाते हैं और सबकी नज़रें उन पर टिक जाती हैं। अल्लाह के रसूल[स०] नजरान से आए उन लोगों से मुँह मोड़ लेते हैं जिसकी वजह से सबको ताज्जुब होता है कि जब अल्लाह के रसूल[स०] ने ख़ुद ही बुलाया है तो फिर ऐसा क्यों कर रहे हैं ?

हमेशा की तरह इस बार भी हज़रत अली[अ०] ने इस गुत्थी को सुलझाया। ईसाईयों से कहा कि तुम लोग यह शानदार कपड़े और सोने-चाँदी के ज़ेवर उतार कर आम कपड़ों में आओ।

थोड़ी देर बाद यह डेलीगेशन कपड़े बदलकर वापस आ जाता है। इसके बाद अल्लाह के रसूल[स०] उनका इस्तेक़बाल करते हैं और उन्हें अपने पास बिठाते हैं। फिर उनके सरदार अबू हारसा से बातचीत शुरु हो जाती है।

अबू हारसाः आपका लेटर मिला जिसके बाद अब हम आपके पास आए हैं ताकि आपसे इस बारे में बात कर सकें।

अल्लाह के रसूल[स०] : हाँ! वह ख़त मैंने ही भेजा है और दूसरों के नाम भी ख़त भेज चुका हूँ। इन लेटर्स में हर एक से एक ही बात कही है कि शिर्क और कुफ़्र को छोड़ कर एक ख़ुदा के हुक्म को मान कर मोहब्बत और तौहीद के दीन, इस्लाम को क़ुबूल कर लो।

अबू हारसाः अगर आप इस्लाम क़ुबूल करने को एक ख़ुदा पर ईमान लाना कहते हैं तो हम पहले से ही ख़ुदा पर ईमान रखते हैं।

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ

فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا

وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ

ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ

अल्लाह के रसूल[स०] : अगर तुम लोग सच में ख़ुदा पर ईमान रखते हो तो ईसा[अ०] को क्यों ख़ुदा मानते हो और सुअर का गोश्त क्यों खाते हो ?

अबू हारसाः इसके लिए हमारे पास बहुत सी दलीलें हैं; जैसे यह कि हज़रत ईसा[अ०] मुर्दों को ज़िन्दा करते थे, अंधों को ठीक करते थे, ऐसे-ऐसे बीमारों को ठीक कर देते थे जिनका इलाज नहीं हो सकता था।

शिफ : तुम ने ईसा[अ०] के जिन मोजिज़ों की बात की वह सही हैं लेकिन यह मोजिज़े ख़ुदा ने ही उन्हें दिये थे, इसलिए ईसा[अ०] की इबादत करने के बजाए उनके ख़ुदा की इबादत करना चाहिए।

अबू हारसा यह जवाब सुनकर चुप हो गया। इस बीच किसी और ने, शायद शरजील ने इस चुप्पी को तोड़ा।

शरजीलः ईसा[अ०] ख़ुदा के बेटे हैं क्योंकि उनकी माँ मरयम ने किसी के साथ निकाह किये बिना उन्हें जन्म दिया था।

इसका जवाब ख़ुदा ने अपने रसूल को 'वही' के ज़रिये भेजाः

''ईसा की मिसाल आदम की तरह है, उन्हें (आदम को माँ-बाप के बग़ैर) मिट्टी से पैदा किया गया है।''

इस जवाब पर फिर से ख़ामोशी छा गई और सभी बड़े पादरी ''अबू हारसा'' की तरफ़ देखने लगे।

जब कोई जवाब नहीं बन पड़ा तो उन्हें सब के सामने यह सब होता हुआ देखकर अच्छा नहीं लगा। इस से ख़ुद को बचाने के लिए वह लोग बहाने करने लगे और कहने लगेः यह बातें हमारी समझ में नहीं आ रही हैं। इसलिए सच साबित करने के लिए मुबाहला किया जाए। यानी ख़ुदा की बारगाह में हाथ उठा कर झूठों पर अज़ाब की दुआ माँगी जाए।

वह सोच रहे थे कि अल्लाह के रसूल[स०] यह बात नहीं मानेंगे लेकिन उनके होश उड़ गये जब उन्होंने सुनाः

''आपके पास इल्म आ जाने के बाद भी अगर यह लोग (ईसा के बारे में) आप से झगड़ा करें तो आप कह दीजिएः आओ हम अपने बेटों को बुलाते हैं और तुम अपने बेटों को बुलाओ, हम अपनी औरतों को बुलाते हैं और तुम अपनी औरतों को बुलाओ, हम अपने नफ़्सों को बुलाते हैं और तुम अपने नफ़्सों को बुलाओ। फिर दोनों अल्लाह से दुआ करें कि जो झूठा हो उस पर अल्लाह की लानत हो।''

सच व झूठ को और अपने हक़ पर होने को साबित करने के लिए ख़ुदा का हुक्म आया कि वह अपने बेटों, औरतों, और अपने नफ़्सों को लेकर आएं; इसके बाद मुबाहला करें और झूठों पर ख़ुदा से लानत की दुआ माँगें।

अब हक़ और बातिल की बेमिसाल कसौटी पेश करना थी। इल्म व अमल का इम्तेहान होना था। ज़ाहिरी ताक़त और रूहानी ताक़त को सबके सामने आना था। दो आसमानी दीनों के मानने वालों की असलियत को ज़ाहिर करना था कि किसका आसमान के मालिक के साथ अभी तक रिश्ता बना हुआ है और किसने यह रिश्ता ख़त्म कर दिया है।

फ़ैसला यह हुआ कि अगले दिन सूरज निकलने के बाद शहर से बाहर मिलते हैं। यह ख़बर पूरे शहर में फैल गई।

24 ज़िलहिज्जह का दिन था। मदीने के आसपास रहने वाले लोग मुबाहेला शुरु होने से पहले ही पहुँच गये।

नजरान के ईसाई एक-दूसरे से कह रहे थेः अगर आज मोहम्मद[स०] अपने सरदारों और सिपाहियों के साथ मैदान में आए तो समझ लेना कि वह हक़ पर नहीं हैं और अगर वह अपने रिश्तेदारों को ले आते हैं तो वह अपने दावे में सच्चे हैं।

सबकी नज़रें शहर के दरवाज़े पर टिकी थीं। दूर से एक साया नज़र आने लगा जिसे देखकर लोग ताज्जुब में पड़ गए। जो कुछ वह लोग देख रहे थे उसके बारे में उन्होंने सोचा भी नहीं था।

अल्लाह के रसूल[स०], इमाम हसन[अ०] का हाथ पकड़े और इमाम हुसैन[अ०] को गोद में उठाए बढ़ रहे थे। उनके पीछे-पीछे उनकी बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] चल रही थीं और इन सब के पीछे इमाम अली[अ०] थे।

जैसे ही उन ईसाईयों ने यह सब देखा वह फ़ौरन ही मुक़ाबले से पीछे हट गए और अपनी हार मान ली कि इन नूरानी चहरे वालों के साथ हम झूठों पर लानत के लिए दुआ नहीं कर सकते।

1-सूरए आले इमरान/59
2-सूरए आले इमरान/61

■ परवेज़ अमीनी

ज़ुहैर इब्ने क़ैन

15 माह रजब सन् 60हि.

अमीरे शाम मुआविया के इन्तेक़ाल की ख़बर मदीने में फैल चुकी है। लोग हर गली और हर नुक्कड़ पर ख़ुशियाँ मनाते हुए बनी उमैय्या की हुकूमत के ख़त्म होने की बातें कर रहे थे।

धीरे-धीरे शहर के हालात ख़तरनाक हो गये

हुसैन इब्ने अली[अ०] ने यज़ीद की हुकमत से खुलकर अपनी जंग का एलान कर दिया था। बनी उमैय्या की नई हुकूमत के सामने इमाम हुसैन[अ०] मज़बूती के साथ डट गए थे जिसकी वजह से आपको मदीना छोड़कर मक्के जाना पड़ गया था।

मक्के में इमाम हुसैन[अ०] को क़त्ल करने की साज़िश की जाने लगी जिसके बाद इमाम हुसैन[अ०] को हज के ही दिनों में मक्का छोड़ना पड़ा ताकि काबे और हरम की हुरमत पामाल न हो।

इमाम हुसैन[अ०] कूफ़े की तरफ़ जा रहे थे। ज़ुहैर भी हज करके कूफ़े की तरफ़ पलट रहे थे।

ज़ुहैर की सारी कोशिश यह थी कि एक ही वक़्त में एक ही जगह इमाम हुसैन[अ०] के क़ाफ़िले के साथ पड़ाव न डालें ताकि इमाम[अ०] से उनका आमना-सामना ही न हो।

आख़िर वह दिन आ ही गया जिस से ज़ुहैर भाग रहे थे।

दोनों क़ाफ़िलों ने अपने-अपने ख़ेमे लगा दिये थे।

इमाम[अ०] ने अपने साथियों से पूछाः ''हमारे सामने किसका क़ाफ़िला है ?''

बताया गयाः ''यह ज़ुहैर इब्ने क़ैन का क़ाफ़िला है जो मक्के जा रहे हैं।''

इमाम[अ०] ने फ़रमायाः ''कोई उनके पास जाए और उन से कहे कि हम उन से मिलना चाहते हैं।''

इमाम[अ०] के एक साथी ने ज़ुहैर के ख़ेमे में जाकर उन तक इमाम का मैसेज पहुँचा दिया।

ज़ुहैर ने अपनी बीवी की तरफ़ एक नज़र डाली। ज़ुहैर समझ ही नहीं पा रहे थे कि क्या जवाब दें। हुसैन[अ०] से मिल जाने का मतलब यह था कि दुनिया को छोड़ दिया जाए, सारे ऐश-आराम को अलविदा कह दिया जाए, बनी उमैय्या के साथ बने-बनाए रिश्तों की ज़ंजीरों को तोड़ दिया जाए लेकिन क्या इन सारी चीज़ों से मुँह मोड़ा जा सकता है ?

दूसरी तरफ़ इमाम हुसैन[अ०] के बुलावे को कैसे ठुकराएं ? ज़ुहैर को इस तरह परेशान देख कर ज़ुहैर की बीवी ने कहाः ज़ुहैर क्या हुआ ? जवाब क्यों नहीं दे रहे हो ?अल्लाह के रसूल[स०] के नवासे ने तुम्हें अपने ख़ेमे में बुलाया है, जाते क्यों नहीं ?

ज़ुहैर ने कहाः ''तुम चलो! मैं आ रहा हूँ।''

ज़ुहैर सोचते-साचते धीरे से उठे और ख़ेमे से बाहर निकल गये। बाहर निकल कर उनकी नज़रें इमाम[अ०] पर पड़ीं जो अपने ख़ेमे से बाहर ज़ुहैर का इन्तेज़ार कर रहे थे।

इमाम हुसैन[अ०] के अन्दर एक अजीब सा नूर था जिसने ज़ुहैर को अपनी तरफ़ खींच लिया था।

ज़ुहैर इमाम[अ०] के पास गये। उनकी ज़बान चुप थी। कुछ बोला नहीं जा रहा था। आँखें झुकी हुई थीं और उनमें हुसैन इब्ने अली[अ०] की तरफ़ देखने की हिम्मत नहीं थी।

इमाम हुसैन[अ०] ख़ुद कुछ क़दम आगे बढ़े और ज़ुहैर को गले लगा लिया।

इमाम हुसैन[अ०] ने ज़ुहैर से कुछ कहा। ज़ुहैर इमाम[अ०] से अलग हुए तो इश्क़ अपना असर कर चुका था। बनी उमैय्या से रिश्तों की सारी ज़ंजीरें टूट चुकी थीं। ज़ुहैर अपने पुराने दोस्तों के साथ फिर से आ मिले थे।

ज़ुहैर अपने ख़ेमे में लौट आए। उन्होंने सारी बात अपनी बीवी को सुनाई और उन्हें कूफ़े की तरफ़ लौट जाने का मश्वरा दिया। उनकी बीवी नहीं मानीं और ज़ुहैर से कहने लगीं कि मुझे भी अपने साथ ले चलो। ज़ुहैर ने भी उनकी बात मान ली और उन्हें भी अपने साथ ले लिया।

ज़ुहैर का क़ाफ़िला इमाम[अ०] के क़ाफ़िले के साथ मिल चुका था।

10 मोहर्रम 61 हिजरी

आशूर का दिन आया और ज़ोह्र की नमाज़ का वक़्त हो गया। हज्जाज इब्ने मसरूक़ ने अज़ान कही और ज़ुहैर ने सईद के साथ दुश्मन से इमाम[अ०] को बचाने का काम संभाल लिया।

नमाज़ की आख़िरी रकअत में सईद शहीद हो गये थे। ज़ुहैर भी ज़ख़्मों से चूर ख़ून भरे बदन के साथ ज़मीन पर आ गिरे और इमाम[अ०] से बोले, ''मौला! अब मुझे पूरा यक़ीन है कि ख़ुदा और उसके रसूल[स०] से मुलाक़ात के लिए मेरा वक़्त आ चुका है''।

इमाम[अ०] ने अपने बचपन के दोस्त ज़ुहैर को गले लगाया और उन्हें मैदान की तरफ़ भेज दिया।

ज़ुहैर और उमर इब्ने सअद के सिपाहियों के बीच एक सख़्त जंग हुई। लड़ते-लड़ते ज़ुहैर अपनी आरज़ू को पहुँच गये। वह सजदे की हालत में ज़मीन पर आए और एक के बाद एक दुश्मन के तीर उनके जिस्म में लगने लगे। ●

हज़रत अली अ0 की विलायत

■ सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई

जैसा कि हदीसों में लिखा है उसके हिसाब से ग़दीर के दिन (18 ज़िल-हिज्जाह) अल्लाह के रसूल[स०] ने मुसलमानों के बीच जो बात रखी थी उसके कई पहलू थे जिसमें से एक पहलू इमाम अली[अ०] की फ़ज़ीलत और उनकी अज़मत है। उस वक़्त के लोग पहले से भी आपकी इन फ़ज़ीलतों और कमालों को जानते थे और क़रीब से आपके अन्दर देख चुके थे। अल्लाह और अल्लाह के रसूल[स०] की नज़र में यह फ़ज़ीलतें और कमाल बहुत अहम थे, इसलिए इन्हीं वैल्यूज़ को सामने रखकर अल्लाह के रसूल[स०] के बाद विलायत और हुकूमत की बुनियाद डाली गई जिसके बाद लोगों को यह पता चल गया कि अल्लाह के रसूल[स०] के बाद इमामत और हुकूमत भी वही आदमी अपने हाथों में ले सकता है जिसके अन्दर यह सारी वैल्यूज़ पाई जाती हों।

मशहूर स्कालर इब्ने अबिल हदीद कहते हैंः इमाम अली[अ०] की फ़ज़ीलतों के बारे में बच्चा-बच्चा जानता था। यहाँ तक कि किसी को भी इस बात में कोई शक नहीं था कि इमाम अली[अ०] ही अल्लाह के रसूल[स०] के बाद ख़लीफ़ा होंगे यानी अल्लाह के रसूल[स०] के बाद हज़रत अली[अ०] की ख़िलाफ़त का यक़ीन हर एक को था। दूसरी जगहों पर ख़ुद अल्लाह के रसूल[स०] भी हज़रत अली[अ०] के बारे में काफ़ी कुछ बता चुके थे।

इस बारे में जो हदीसें हम शियों और अहलेसुन्नत के यहाँ आई हैं वह ऐसी हदीसें हैं जिनके बारे में कोई शक नहीं है। आपके फ़ज़ायल शिया और सुन्नी दोनों ने ख़ूब बयान किये हैं।

इब्ने इस्हाक़ (जिनकी सीरत की किताब काफ़ी मशहूर है) लिखते हैंः एक दिन अल्लाह के रसूल[स०] ने हज़रत अली[अ०] से फ़रमायाः अगर मुझे इस बात का डर न होता कि लोग तुम्हारे बारे में वही कुछ कहेंगे जो ईसा इब्ने मरयम[अ०] के मानने वाले उनके बारे में कह रहे थे तो मैं तुम्हारे बारे में ऐसी बातें लोगों को बताता कि तुम जहाँ-जहाँ से गुज़रते लोग तुम्हारे पैरों की मिट्टी को तबर्रुक समझ कर उठाते-फिरते।

ग़दीर का दूसरा पहलू

ग़दीर का एक दूसरा पहलू ''विलायत'' है जो

من کنت مولاہ فھذا علی مولاہ

के एलान के ज़रिये समझाया गया है।

जब अल्लाह के रसूल[स०] ने इस्लामी हुकूमत का कंट्रोल एक ख़ास इन्सान के साथ जोड़ा तो इसके लिए ''मौला'' का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया और इस विलायत को अपनी विलायत के बराबर बताया। ख़ुद यही मतलब जो ''विलायत'' के अन्दर पाया जाता है अपनी जगह बहुत बड़ी चीज़ है। यानी इस्लाम, विलायत के इस मतलब से हट कर लोगों के लिए किसी और हुकूमत को नहीं मानता। जो लोगों पर हुकूमत करने वाला और उनका वली है, वह डिक्टेटर नहीं है कि जो चाहे करे और अपने बाद किसी को भी हुकूमत थमा कर चला जाए बल्कि उसे इस रूप में पेश किया गया है कि वह मुसलमान का हेड और उन पर भरपूर कंट्रोल रखने वाला है। उसे यह हक़ इसी हैसियत से दिया गया है। इसलिए इस्लाम में हुकूमत एक ऐसी चीज़ है जिसका बादशाहत और सलतनत से कोई लेना-देना नहीं है।

सही डेमोक्रेटिक हुकमत

अगर विलायत के इस मलतब को और मुसलमानों के वली के लिए इस्लाम ने जो शर्तें रखी हैं उन्हें खोल कर बात की जाए तभी एक सही पिक्चर सामने आ सकेगी।

इस बारे में मासूमीन[अ०] की बहुत सी हदीसें हैं जिन से मदद मिल सकती है। इमाम अली[अ०] के उस लेटर में जिसे आपने मालिके अश्तर के नाम लिखा था बहुत सी नसीहतें और अहम बातें लिखी हुई हैं। उस लेटर पर ध्यान देने के बाद ही हमें यह अन्दाज़ा हो सकता है कि सही मायनी में एक आज़ाद और इंसाफ़ भरी हुकूमत वही हुकूमत हो सकती है जिसे हम दूसरे मासूमीन[अ०] और इमाम अली[अ०] की हदीसों, बातों और उनकी सीरत में देखते हैं।

इस्लामी विलायत और हुकूमत में डिक्टेटरशिप, ज़ोर-ज़बरदस्ती, लोगों को नुक़सान पहुँचाना या अपनी मनमानी करना जैसी कोई चीज़ नहीं पाई जाती है।

वैसे कहने का मतलब यह नहीं है कि कोई आदमी इस्लामी विलायत और इस्लामी हुकूमत के नाम पर अपनी मनमानी नहीं कर सकता बल्कि कहने का मतलब यह है कि जो अल्लाह

के बताए हुए इस रास्ते पर चलेगा और इस्लामी सिस्टम के हिसाब से हुकूमत करेगा वह ऐसा नहीं कर सकता, वरना न जाने कितने ऐसे लोग हैं जो अच्छे-अच्छे नामों का लेबल लगाकर दुनिया का हर बुरा काम करते रहे हैं।

वैल्यूज़ः इस्लामी विलायत का सोर्स

इस्लाम में विलायत का सोर्स बेसिक वैल्यूज़ हैं, ऐसी वैल्यूज़ जो इस ज़िम्मेदारी को, इस पोस्ट को और लोगों को तरह-तरह के ख़तरों से बचाकर रखती हैं। जैसे ''अदालत'' जो एक ऐसी ताक़त और स्प्रिट है जो इन्सान को गुनाहों और ग़लतियों से बचाती है। अदालत, विलायत की एक अहम शर्त है। अगर यह शर्त पाई जाती है तो विलायत को कोई ख़तरा नहीं हो सकता क्योंकि जैसे ही ''हाकिम'' यानी हुकूमत करने वाला कोई ऐसा काम करेगा जिसका इस्लाम से कोई लेना-देना नहीं है और वह इस्लाम के हुक्म के ख़िलाफ़ है तो अपने आप अदालत की शर्त उसके अन्दर से ख़त्म हो जाएगी। एक छोटा सा जुल्म और एक छोटा सा फ़ैसला जो शरीअत के ख़िलाफ़ है इंसान की अदालत को ख़त्म कर देता है। ज़िम्मेदारियाँ निभाने में सुस्ती दिखाना या लोगों में भेदभाव करना भी हाकिम से अदालत को छीनने के लिए काफ़ी है और जैसे ही अदालत ख़त्म होगी हाकिम से अपने आप हुकूमत का हक़ छिन जाएगा जिसके बाद उस हाकिम के बाक़ी रहने की कोई गुन्जाइश नहीं रह पाएगी।

अब सोचिए और बताईये कि क्या दुनिया के किसी सिस्टम में ऐसा कोई क़ानून पाया जाता है ?

किस पॉलिटिकल सिस्टम और डेमोक्रेटिक हुकूमत में इस जैसा कोई तरीक़ा मौजूद है कि जिसमें, समाज और इन्सानियत की भलाई के साथ-साथ वैल्यूज़ को भी इतनी ही जगह दी गई हो ?

मुसलमानों में विलायत का तजुर्बा

हम मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि हम भी इस विलायत का तजुर्बा करें। हिस्ट्री में कुछ ऐसे लोग रहे हैं जिन्होंने इसका तजुर्बा नहीं होने दिया, आख़िर यह कौन लोग थे? यह वही लोग थे जो विलायत के सिस्टम को अपनी हुकूमत के लिए ख़तरा समझते थे जबकि इस में ख़ुद लोगों का ही फ़ायदा है। ऐसे कौन से मुल्क होंगे जिनको यह बात पसन्द न हो कि उनका हाकिम शहर का भूखा, शराबी, दुनिया का पुजारी और दौलत की पूजा करने वाला न हो, बल्कि एक मुत्तक़ी, परहेज़गार, ख़ुदा के हुक्म का ध्यान रखने वाला और नेक इन्सान हो? कोई भी क़ौम और मज़हब ऐसा नहीं है जो ऐसे हाकिम को पसन्द न करता हो।

इस्लामी विलायत यानी मोमिन और मुत्तक़ी इन्सान की हुकूमत, एक ऐसे इन्सान की हुकूमत जो अपनी ख़्वाहिशों से दूर हो, नेक हो और अच्छे काम करता हो। ऐसी कौन सी क़ौम और कौन सा मुल्क है जो अपना फ़ायदा न चाहता हो और ऐसा हाकिम पसन्द न करता हो?

आख़िर वह कौन लोग हैं जो इतने अच्छे और इतने बड़े पॉलिटिकल सिस्टम से लड़ने पर तुले हैं?

सामने की बात है कि ऐसा वही लोग करेंगे जो जानते हैं कि उनके अन्दर कोई अच्छाई नहीं है और नफ़्स की मुख़ालिफ़त की ताक़त उनमें नहीं पाई जाती।

दुनिया में जो लोग इस वक़्त हुकूमत कर रहे हैं उनमें से कौन हैं जो इस्लामी हिसाब से हुकूमत करने को पसन्द करते हैं?

हम लोगों ने हमेशा यह बात कही है और यह हमारे इस्लामी इन्क़ेलाब का हिस्सा है कि हमारा इन्क़ेलाब और हमारा इस्लामी सिस्टम, इस्लाम की दुश्मन हुकूमतों के ख़िलाफ़ एक चैलेंज है।

यही वजह है कि दुनिया की हुकूमतें इस इस्लामी इन्क़ेलाब और इस्लाम और इस हुकूमत की दुश्मन हैं क्योंकि दुनिया की डिक्टेटर और ज़ालिम हुकूमतों पर इस इस्लामी इन्क़ेलाब ने एक बहुत बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है।

इस्लामी विलायत लोगों की कामयाबी और निजात का रास्ता

जो चीज़ें इस्लामी विलायत से मिलती हैं वह इन्सानों के फ़ायदे में, ख़ूबसूरत और सबको अपनी तरफ़ खींचने वाली हैं। दुनिया का कोई भी इन्सान हमारे मुल्क को जिस एंगल से भी देखना चाहे देखे, वह सारी चीज़ें जो इमाम ख़ुमैनी की ज़िन्दगी में मौजूद थीं और वही सारी बातें जिस से यह हमारी पब्लिक इन 10-12 साल के पीरियड में जुड़ी हुई थीं, आज भी दिखाई देंगी। यह है विलायत का मतलब।

मेरे कहने का मतलब यह है कि

अगर दुनिया वाले तरह-तरह के धर्मों और दीनों से हट कर जिन चीज़ों के साए में ज़िन्दगी बिता रहे हैं, उन्हें कामयाबी का रास्ता चाहिए तो उन्हें इस्लामी विलायत की तरफ़ लौटना होगा। इसमें कोई शक नहीं है कि भरपूर इस्लामी विलायत सिर्फ़ एक इस्लामी सोसाइटी ही में अपनाई जा सकती है क्योंकि इस्लामी वैल्यूज़ की बुनियाद पर विलायत; इस्लामी अदालत, इस्लामी इल्म और इस्लामी दीन को ही कहते हैं जो एक हद तक सारे समाजों और क़ौमों को निजात दे सकता है। लेकिन अगर किसी को कोई सच्चा लीडर और हाकिम चाहिए तो फिर उन लोगों के पीछे भटकने की ज़रूरत नहीं है जिनको दुनिया का कैपिटलिस्ट लीडर बनाकर लाया जाता है बल्कि उन्हें किसी अच्छे, मुत्तक़ी, और दुनिया की लालच से दूर रहने वाले इन्सान की तलाश करनी होगी जो हुकूमत अपने निजी फ़ायदों के लिए न करना चाहता हो बल्कि लोगों और समाज की भलाई, तरक़्क़ी और सुधार के लिए चाहता हो।

यह है इस्लामी विलायत की असली पिक्चर जिस से दुनिया की यह डेमोक्रेटिक हुकूमतें बहुत दूर हैं।

हमारे यहाँ आज जो पॉलिटिकल सिस्टम पाया जाता है वह इसी ''विलायत'' से जुड़ा है जिसको चलाने वाला आदमी सिर्फ़ इस्लामी सिस्टम को समझने और उसे लागू करने की सलाहियत रखने वाला इन्सान यानी फ़क़ीह और मुजतहिद हो सकता है। इन्हीं दो चीज़ों से मिल कर ''विलायते फ़क़ीह'' का सिस्टम बनता है।

जो लोग इमाम अली[अ०] और ग़दीर को नहीं समझते या समझ कर भी अंदेखा करते हैं, वही दुनिया में आज इस विलायते फ़क़ीह की मुख़ालिफ़त करते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि यह सिस्टम दुनिया के दूसरे हर सिस्टम को चैलेंज करने वाला है। लेकिन जो लोग हज़रत अली[अ०] की पाक ज़िन्दगी और उनकी हुकूमत के सिस्टम को जानते और समझते हैं वह जानते हैं कि जिस रास्ते पर आज हम चल रहे हैं वह ग़दीर व इस्लाम की बरकतों का नतीजा है और हमारी पब्लिक के लिए यह कोई नई चीज़ नहीं है।

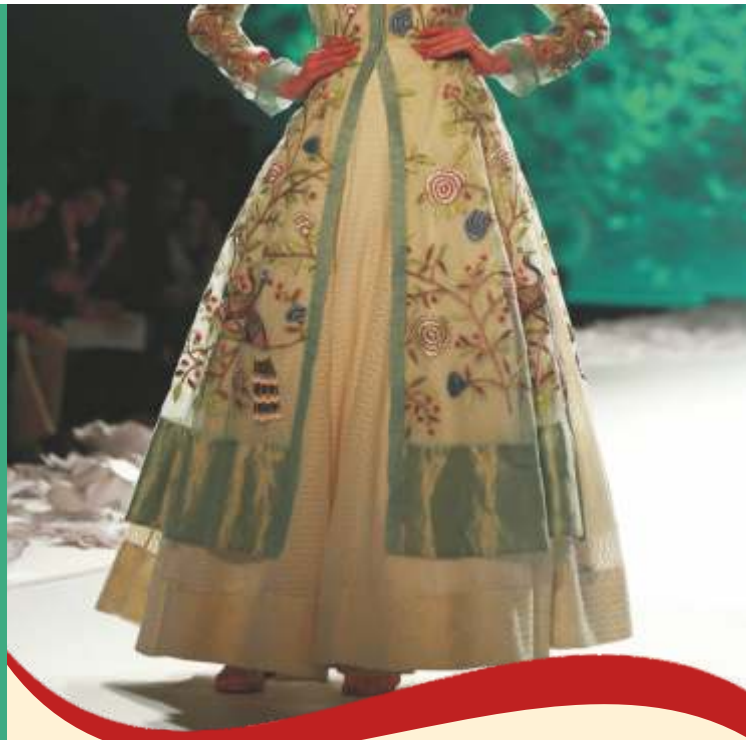

HK

KAZIM
Zari Art

All kinds of
Sarees, Suits, Lehnga
& Designer Wedding Gown

Work shop
Ahata Dhannu Beg, kazmain Road
Sa'adat ganj, Lucknow

Showroom
1st floor, Doctor Gopal Pathak Building
latouch road, Hevett road Lucknow

Contact No.
+91-9795907202, 9839126005

■ अफ़्शाँ मुराद

नाशपाती का पेड़

ज़िन्दगी एक इम्तेहान है। यहाँ हर एक के ज़िम्मे उसके हिस्से का एग्ज़ाम पेपर आता है जिसे अच्छी तरह से पास करना बहुत ज़रूरी है। कुछ के हिस्से में मुश्किल पेपर आता है, कुछ के हिस्से में आसान, लेकिन किसी भी मुश्किल या आसानी के नतीजे में अपनी ज़िन्दगी और ख़ुशियों को दाँव पर नहीं लगाया जा सकता। हर मुश्किल के साथ अल्लाह ने कोई न कोई आसानी ज़रूर रखी है, लेकिन ज़रूरी यह है कि अपनी हर मुश्किल और हर आसानी से कोई न कोई सीख ज़रूर ली जाए।

मैंने अपनी ज़िन्दगी से यह सीखा है कि ज़िन्दगी एक पहिये की तरह है जो कभी घूम कर ऊपर जाता है तो कभी नीचे चला जाता है, इसलिए इसमें परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह ज़िन्दगी का क़ानून है कि हर ऊँच के बाद एक नीच है। ख़ास बात सिर्फ़ यह होती है कि इस नीच के साथ-साथ हम ऊँच से भी कुछ न कुछ ज़रूर सीखें क्योंकि ऐसा कभी नहीं होता कि ज़िन्दगी आपको कुछ सीख दिये बग़ैर गुज़र जाए।

अब यह आप पर है कि ज़िन्दगी का यह लेसन आपने किस मायनी में पढ़ा है। किसी एक बुरे वक़्त को बुनियाद बनाकर अपनी पूरी ज़िन्दगी बर्बाद नहीं की जा सकती। इसी तरह किसी अच्छे वक़्त के सहारे पूरी उम्र यादों में भी नहीं गुज़र सकती। हर पल की अपनी एक क़ीमत होती है और हर बीता पल अपनी क़ीमत बढ़ाता चला जाता है। कुछ पल अनमोल होते हैं और कुछ पलों का कोई मोल नहीं होता। यह इस पर डिपेन्ड करता है कि वह पल हम ने कैसे गुज़ारा। हर एक के लिए ज़िन्दगी का मज़ा अलग होता है, किसी के लिए मीठा, किसी के लिए तीखा, किसी के लिए कड़वा... हर एक उसको अपने हालात के हिसाब से चखता है।

ज़िन्दगी के तजुर्बों से एक बात याद आ रही है जो मेरे पापा मुझे सुनाते थे कि एक आदमी के चार बेटे थे। वह चाहता था कि उसके बेटे यह बात सीख लें कि किसी को परखने में जल्दबाज़ी नहीं करना चाहिए। इसलिए इस बात को समझाने के लिए उसने अपने बेटों को कहीं भेजने का फ़ैसला किया। उसने उन्हें कहीं दूर नाशपाती का एक पेड़ देखने के लिए भेजा। दूसरी बात यह कि एक वक़्त में एक ही बेटे को भेजा कि जाओ और उस पेड़ को देख कर आओ। बारी-बारी सबका नम्बर आने लगा।

पहला बेटा सर्दी के मौसम में गया, दूसरा बरसात में, तीसरा गर्मी के मौसम में, और सबसे छोटा बेटा पतझड़ के मौसम में गया। जब सब बेटे अपना-अपना सफ़र ख़त्म करके वापस लौट आए तो उस आदमी ने चारो बेटों को एक साथ अपने पास बुलाया और सब से उनके सफ़र की अलग-अलग जानकारी ली।

पहले बेटे ने जो जाड़े के मौसम में उस पेड़ को देखने गया था, कहा कि वह पेड़ बहुत भद्दा, झुका हुआ और टेढ़ा सा था।

दूसरे बेटे ने कहाः वह पेड़ तो बहुत हरा-भरा था। हरे-हरे पत्तों से भरा हुआ।

तीसरे बेटे ने उन दोनों से हटकर बात कही कि वह पेड़ तो फूलों से भरा हुआ था और उसकी महक दूर-दूर तक आ रही थी।

सबसे छोटे बेटे ने अपने तीनों बड़े भाईयों की बात काटते हुए कहा कि वह नाश्पाती का पेड़ तो फलों से लदा था और उस फल के बोझ से पेड़ ज़मीन से लगा हुआ था जिसकी वजस से वह पेड़ ज़िन्दगी से भरपूर नज़र आ रहा था।

यह सब सुनने के बाद उस आदमी ने मुस्कुरा कर अपने चारो बेटों की तरफ़ देखा और कहा, ''तुम चारों में से कोई भी ग़लत नहीं कह रहा है। सब अपनी-अपनी जगह सही हैं।''

बेटों को बाप का जवाब सुनकर बहुत ताज्जुब हुआ कि ऐसा भला कैसे हो सकता है?!

बाप ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, ''तुम किसी भी पेड़ को या किसी भी आदमी को सिर्फ़ एक मौसम या एक हालत में देख कर कोई सही फ़ैसला नहीं कर सकते। किसी आदमी को जाँचने के लिए थोड़ा वक़्त ज़रूरी होता है। इन्सान कभी किसी हालत में होता है, कभी किसी और हालत में। अगर पेड़ को तुमने जाड़े के मौसम में भद्दा और अजीब सी हाल में देखा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि उस पर कभी फल नहीं आएगा। इसी तरह अगर किसी आदमी को तुम ग़ुस्से की हालत में देख रहे हो तो इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि वह आदमी बुरा ही होगा।

कभी भी किसी के बारे में जल्दबाज़ी में कोई फ़ैसला मत करना। जब तक अच्छी तरह किसी को जाँच न लो उस वक़्त तक उसके बारे में कोई फ़ैसला मत करो। किसी

को उसी वक़्त समझा या परखा जा सकता है जब यह सारे मौसम गुज़र जाएं। अगर तुम सर्दी के मौसम में ही अन्दाज़ा लगाकर फ़ैसला कर लोगे तो गर्मी की हरियाली, बहार की ख़ूबसूरती और भरपूर ज़िन्दगी से फ़ायदा नहीं उठा पाओगे।

इसीलिए सिर्फ़ एक दुख या एक परेशानी के लिए अपनी ज़िन्दगी की बाक़ी सारी ख़ुशियों को दाँव पर मत लगाइये, ज़िन्दगी के एक बुरे मौसम को बुनियाद बनाकर बाक़ी ज़िन्दगी को मत परखिये, बल्कि सारे मौसमों, सारे मज़ों को भी जानिये। यही ज़िन्दगी का ख़ुलासा है।

हमारी ग़लती हमेशा यही होती है कि हम लोग किसी के बारे में फ़ैसला करने में बहुत जल्दी करते हैं।

हमारे ख़याल में जो हम सोच रहे हैं बस वही सही होता है। जबकि ऐसा नहीं है, हम भी ग़लत हो सकते हैं। हमारी सोच भी ग़लत हो सकती है। ज़िन्दगी के पाज़िटिव एंग्लि को भी देखना ज़रूरी है। ज़िन्दगी में सब कुछ बुरा या सब कुछ अच्छा नहीं होता। अल्लाह ने हर चीज़ को बैलेंस में रखा है। अपने आप को अच्छे कामों में बिज़ी रखिए, इस से आप पर भी अच्छा असर पड़ेगा, समाज में भी बेहतरी आएगी और घर का माहौल भी बेहतर होगा।

इस वक़्त हम लोग जो देख रहे हैं उसके हिसाब से हमारे घरों का सिस्टम और माहौल बहुत बिगड़ चुका है। बच्चों की परवरिश का सिस्टम कमज़ोर होता जा रहा है। माँ-बाप ने बच्चों की परवरिश सोशल मीडिया और मीडिया के हाथ में दे दी है। छोटे-छोटे बच्चे मोबाइल फ़ोन और टी.वी. में लगे रहते हैं। माँएं भी बच्चों की ज़िद और उनके रोने-धाने से बचने के लिए घंटों-घंटों मोबाइल उनके हाथ में दे देती हैं। अब बच्चा उस से क्या सीख रहा है यह तब आप को पता चलता है जब वह किसी दूसरे के सामने इसका इज़हार करता है और आप ताज्जुब से उसको देखती रह जाती हैं।

इसलिए अच्छा यही है कि ख़ुद को भी और अपने बच्चों को भी दूसरे बहुत से अच्छे कामों में बिज़ी रखने की कोशिश कीजिए ताकि समाज में कुछ अच्छे और काम के इन्सान भी जन्म ले सकें। वरना सिर्फ़ पॉपुलेशन बढ़ा कर हम कोई कमाल नहीं कर रहे हैं।

आप भी मरयम के लिए आर्टिकल भेज सकती हैं

1. A4 साइज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकिल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. भेजे गए आर्टिकिल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकिल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकिल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक़्त पर पब्लिश किया जाएगा।
8. आर्टिकिल में एडिटर को बदलाव का इख़्तियार होगा।
9. आर्टिकिल के साथ अपना पूरा एड्रेस और कांटेक्ट नम्बर ज़रूर भेजिए।

मौत का सामना

■ सज्जाद सफ़वी

मौत एक ऐसी सच्चाई है जिसे कोई नहीं नकार सकता। हर इन्सान यह बात जानता और समझता है कि उसे एक न एक दिन इस दुनिया से जाना है लेकिन मोमिन सिर्फ़ इस दुनिया से जाने पर ही ईमान नहीं रखता बल्कि वह इस बात पर भी यक़ीन रखता है कि उसकी असली जगह आख़िरत है और उसे आख़िरत ही के लिए पैदा किया गया है।

हज़रत अली[अ०] ने अपने ख़ुतबों और लेटर्स में कई जगह मौत का ज़िक्र किया है और अपने चाहने वालों को नसीहत की है कि मौत को बार-बार याद करते रहें।

आईये! जानते हैं कि इमाम हसन[अ०] को जो नसीहत इमाम अली[अ०] ने लिखी है उसमें आप ने मौत के बारे में क्या लिखा हैः

''बेटा! याद रखो कि तुम्हें आख़िरत के लिए पैदा किया गया है, दुनिया के लिए नहीं और जाने के लिए बनाया गया है, दुनिया में बाक़ी रहने के लिए नहीं। तुम्हारा जन्म मौत के लिए हुआ है, ज़िन्दगी के लिए नहीं और तुम उस घर में हो जहाँ से हर हाल में चले जाना है। तुम्हें सिर्फ़ ज़रूरत भर सामान यहाँ के लिए रखना है। जान लो कि तुम आख़िरत के रास्ते पर हो। मौत तुम्हारा पीछा कर रही है जिस से कोई भागने वाला नहीं बच सकता और कोई उसके हाथ से नहीं निकल सकता। मौत हर हाल में उसे पा लेगी। मौत की तरफ़ से होशियार रहो क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें किसी बुरे हाल में पकड़ ले और तुम तौबा के लिए सोचते ही रह जाओ। कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे और तौबा के बीच में आ जाए। अगर ऐसा हुआ तो समझ लो कि तुम ने ख़ुद को बर्बाद कर लिया है।''

इमाम अली[अ०] ने हमें यहाँ हमारे पैदा होने का मक़सद, दुनिया की असलियत, आख़िरत की अहमियत और आख़िरत के लिए दुनिया में इन्सान की ज़िम्मेदारी बताई है।

आख़िरत, न कि दुनिया

''तुम्हें आख़िरत के लिए पैदा किया गया है, दुनिया के लिए नहीं।''

इस्लाम और दूसरे आसमानी धर्मों में दुनिया इन्सान का असली वतन और हमेशा रहने की जगह नहीं है। इन्सान को इस दुनिया में बस कुछ ही दिन रहना है। उसको हमेशा-हमेशा अगर कहीं रहना है तो वह आख़िरत है। या यूँ कहा जाए कि दुनिया उसकी मंज़िल और मक़सद (डेस्टिनेशन) नहीं है बल्कि यह सिर्फ़ एक रास्ता या एक पुल है। एक ऐसा बाज़ार है जहाँ से सफ़र का सामान लेकर आख़िरत की तरफ़ जाना है।

इसलिए इन्सान के पैदा होने का असली मक़सद आख़िरत है, दुनिया नहीं। हाँ! दुनिया में भी इन्सान की ज़िन्दगी के लिए एक मक़सद बताया गया है जो उसे उसके असली मक़सद की तरफ़ बढ़ने में मदद देता है। क़ुरआन करीम इन्सान के पैदा होन का मक़सद यूँ बता रहा हैः

''मैंने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।''[1]

इन्सान उसी वक़्त ठीक-ठाक अपनी मंज़िल तक पहुँचेगा जब वह दुनिया में आने के अपने मक़सद को पूरा करता हुआ ख़ुदा की बन्दगी करेगा। ख़ुदा की बन्दगी का मतलब यह नहीं है कि इन्सान नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात जैसे कुछ वाजिब काम करके आराम से बैठ जाए बल्कि मतलब यह है कि इन्सान की ज़िन्दगी का हर वक़्त और हर पल ख़ुदा की इताअत में गुज़रे। यह उसी वक़्त हो सकता है जब इन्सान ख़ुद को ख़ुदा

के अलावा दूसरे हर किसी की बन्दगी या ग़ुलामी से आज़ाद कर ले और सिर्फ़ ख़ुदा की बन्दगी करे। यही ''ला इला-हा इल-लल्लाह'' का मतलब है।

दुनिया कभी ख़त्म न होने वाली चीज़ नहीं है

''तुम्हें ख़त्म होने के लिए बनाया गया है, दुनिया में बाक़ी रहने के लिए नहीं।''

इसका मतलब यह नहीं है कि मौत इन्सान के ख़त्म हो जाने का नाम है बल्कि ख़त्म होने की बात दुनिया के लिए कही गई है। वरना सच्चाई यही है कि इन्सान को ख़त्म नहीं होना है बल्कि बाक़ी रहना है जिसका सुबूत अल्लाह के रसूल[स०] की यह हदीस है जिसमें आप फ़रमाते हैं:

''तुम्हें ख़त्म होने के लिए पैदा नहीं किया गया है बल्कि बाक़ी रहने के लिए पैदा किया है।''

क्या इमाम अली[अ०] और रसूले ख़ुदा[स०] की बात कोई टकराव है ?

इन दोनों में कोई टकराव नहीं है। इमाम अली[अ०] दुनिया की असलियत बता रहे हैं और रसूले इस्लाम[स०] इन्सान की हक़ीक़त।

ज़ाहिर है कि जब इन्सान को इस दुनिया में भेजा ही इसलिए गया है कि उसे आख़िरत में रहने की तैयारी करना है तो फिर बाक़ी भी आख़िरत ही को रहना है, दुनिया को नहीं। दुनिया की हर चीज़ को एक दिन ख़त्म हो जाना है लेकिन अगर इन्सान बाक़ी रहना चाहता है तो उसे अपने आप को उस सोर्स से जोड़ना होगा जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं है। क़ुरआन करीम फ़रमाता है:

''ख़ुदा के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को न पुकारो, उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। उसके अलावा हर चीज़ ख़त्म होने वाली है और तुम सबको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।''[2]

ज़िन्दगी या मौत

तुम्हें मौत के लिए पैदा किया गया है, ज़िन्दगी के लिए नहीं।

यह बात भी पिछली वाली बात की तरह ही है। इसका मतलब यह नहीं है कि मौत आएगी तो ज़िन्दगी ख़त्म हो जाएगी बल्कि मतलब यह है कि दुनिया में इन्सान आया ही मौत का मज़ा चखने के लिए है और उसे मौत के दरवाज़े से गुज़र कर दूसरी दुनिया में जाना है जहाँ असली और हमेशा की ज़िन्दगी की शुरुआत होगी। जिसका मतलब यह है कि इन्सान को दुनिया में ज़िन्दगी की ख़ुशियों के पीछे नहीं रहना चाहिए बल्कि इस ज़िन्दगी से फ़ायदा उठाकर उस ज़िन्दगी को अच्छा बनाने और संवारने के बारे में सोचना चाहिए। क़ुरआन करीम इस बारे में यूँ कह रहा है:

''असल में आख़िरत ही ज़िन्दगी गुज़रीने की जगह है।''[3]

आख़िरत के रास्ते पर

''तुम उस घर में हो जहाँ से तुम्हें हर हाल में चले जाना है और सिर्फ़ ज़रूरत भर सामान के लिए यहाँ कोशिश करना है क्योंकि तुम आख़िरत के रास्ते पर हो।''

यह दुनिया वह जगह है जहाँ इन्सान को बस थोड़ा सा वक़्त बिताने के लिए भेजा गया है, यहाँ उसे ठहरना नहीं है बल्कि एक लम्बे सफ़र के लिए कुछ देर बस रुकना है। क़ुरआन एलान कर रहा है:

''आपके लिए मौत है और उन्हें भी मौत के दरवाज़े से गुज़रना है।''[4]

''सब को मौत का मज़ा चखना है।''[5]

''हर चीज़ को मिट जाना है।''[6]

अब इन्सान को आगे का जो सफ़र करना है उसके लिए उसे इसी दुनिया से हर ज़रूरी सामान साथ लेकर जाना है। अब सवाल यह है कि कौन सा सामान लेकर जाना है और वह सामान है क्या ? क़ुरआन करीम इस सवाल का जवाब देते हुए फ़रमाता है:

''सफ़र का सामान साथ लेते चलो और जान लो कि बेहतरीन सामान तक़वा है।''[7]

अगर दुनिया और आख़िरत के बारे में हमारी सोच वैसी ही होगी जैसी इमाम अली[अ०] ने हमें समझाई है तो हमारी ज़िन्दगी का रंग-ढंग ही बदल जाएगा। फिर माल व दौलत की रेल-पेल, लालच, कंजूसी, लम्बी-लम्बी ख़्वाहिशें, ज़रा-ज़रा सी बात पर फ़ाल्तू लड़ाईयाँ और दुनियावी स्टेटस के लिए दौड़-भाग ख़त्म हो जाएगी। इसके बजाए इन्सान नेकियों या अच्छे कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करेगा।

मौत इन्सान के पीछे-पीछे आ रही है

मौत तुम्हारा पीछा किये हुए है जिस से कोई भागने वाला बच नहीं सकता। कोई भी उसके हाथ से निकल नहीं सकता। वह हर हाल में उसे पा लेगी।

मौत जैसा शिकारी हमेशा इन्सान के पीछे

लगा रहता है और जहाँ उसे मौक़ा मिलता है वह इन्सान का शिकार कर लेता है। किसी को बचपन में, किसी को जवानी में और किसी को बुढ़ापे में कहीं न कहीं जकड़ ही लेता है। कोई भी इन्सान और जानदार उस से बच नहीं सकता जैसा कि क़ुरआन करीम फ़रमाता है:

''तुम जहाँ भी रहो मौत तुम्हें जकड़ ही लेगी, चाहे तुम मज़बूत क़िलों में जाकर ही क्यों न बन्द हो जाओ।''[8]

जी हाँ! यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे कोई भी नहीं ठुकरा सकता। इसके लिए न वक़्त का पता है, न जगह की ख़बर। शायद यहाँ शायद वहाँ, शायद ज़मीन पर शायद आसमान में, शायद आज शायद कल। इसमें किसी के लिए छूट भी नहीं है यानी कोई अमीर, कोई ताक़त वाला, कोई बादशाह यहाँ तक कि कोई ख़ुदा का वली भी चाहे तो मौत से नहीं बच सकता बल्कि क़ुरआन तो अल्लाह के रसूल[स०] के लिए भी एलान कर रहा है:

''आपको भी मौत आना है और उन्हें भी मौत आना है।''[9]

मौत आए तो बेहतरीन हालत में

''इसलिए मौत की तरफ़ से होशियार रहो क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें किसी बुरे हाल में पकड़ ले और तुम तौबा के लिए बस सोचते ही रह जाओ। कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे और तौबा के बीच में जाए। अगर ऐसा हो गया तो तुम ख़ुद को बर्बाद कर बैठोगे।''

यहाँ इमाम अली[अ०] मौत के बारे में यह बात बताना चाह रहे हैं कि किसी को भी ख़बर नहीं है कि मौत कब और किस हालत में आएगी। इसलिए हमें इस बात का भी ध्यान रखना है कि कहीं ऐसा न हो कि मौत किसी बुरी हालत में आ जाए। इस बात में भी कोई शक नहीं है कि हर इन्सान बेहतरीन हालत में मरना चाहता है। ख़ास कर हर मुसलमान बेहतरीन मौत ही चाहता है। मौत के आने की सबसे बुरी हालत यह हो सकती है कि इन्सान गुनाह करते हुए इस दुनिया से चला जाए या गुनाह करके तौबा करना चाहता हो लेकिन उसे तौबा की भी तौफ़ीक़ न मिल सके।

मरने की बेहतरीन हालत यह है कि इन्सान इस्लाम की मौत मरे, ईमान पर उसकी मौत हो, तौबा करके इस दुनिया से जाए और ख़ुदा और बन्दों के हक़ अदा करके जाए। क़ुरआन करीम फ़रमाता है:

''मरो तो इस हालत में कि ख़ुदा के सामने पूरी तरह से तस्लीम होकर मरो।''[10]

एक सवाल

यहाँ एक सवाल यह उठता है कि ख़ुदा ने मौत का वक़्त तय क्यों नहीं किया है? या इस तरह कहा जाए कि इसे छुपा कर क्यों रखा है? ऐसा क्यों नहीं किया कि हर आदमी पहले से ही अपनी मौत का वक़्त जान लेता ताकि कम से कम मौत के वक़्त तो गुनाह की हालत में न होता?

जहाँ तक हमें समझ में आता है शायद इस का राज़ यह हो कि अगर मौत का वक़्त तय होता और हर एक को पता होता कि उसे कब मरना है तो शैतान उसे हमेशा यह समझाता रहता कि नेकियाँ करने के लिए और तौबा के लिए अभी तो बहुत वक़्त पड़ा है। इस तरह इन्सान के अन्दर गुनाह करने की हिम्मत बढ़ जाती लेकिन जब पता है कि किसी वक़्त भी मौत आ सकती है और दूसरी तरफ़ बेहतरीन हालत में भी मरना है तो कम से कम वह लोग जो ख़ुदा के सामने सरेन्डर होकर, नेक होकर, इस्लाम के रास्ते पर चलते हुए और ईमान की हालत में इस दुनिया से जाना चाहते हैं वह तो ख़ुद को हमेशा तैयार रखेंगे ही, नेकियों की कोशिश करते रहेंगे, बुराईयों से बचते रहेंगे, वाजिब काम करने और हराम कामों से दूर रहने के लिए कोशिश करते रहेंगे, ख़ुदा के बन्दों के हक़ अदा करते रहेंगे, उनकी ख़िदमत करते रहेंगे और अल्लाह की नेमतों का सही इस्तेमाल करेंगे। अब जब मौत उनके सामने आएगी तो वह उस से घबराएंगे नहीं बल्कि इस यक़ीन के साथ कि वह ख़ुदा से मुलाक़ात के लिए जा रहे हैं मौत जैसी दुल्हन को मुस्कुराते हुए गले लगा लेंगे।

1-सूरए ज़ारियात/56,
2-सूरए क़सस/88,
3-सूरए अनकबूत/64
4-सूरए ज़ुमर/30
5-सूरए अनकबूत/57
6-सूरए रहमान/26
7-सूरए बक़रा/197
8-सूरए निसा/78
9-सूरए ज़ुमर/30
10-सूरए बक़रा/132

WHATSAPP CORNER

कहानी

सब्ज़ी वाले

सादिक़ाबाद में बारिश की बूँदें अभी गिर रही थीं। वह गली के कोने पर पहुँच कर ठिठक गया। उस बूढ़े को उसने एक दिन पहले भी एक टूटी-फूटी मेज़ पर कुछ सब्ज़ी और कुछ फ्रूट बेचने के लिए सजाए देखा था और दोबारा देखे बिना गाड़ी गली में घर की तरफ़ मोड़ ली थी।

आज वह पैदल था।

आज उसके रूकने की वजह दस बारह साल का एक बच्चा और उसके पास खड़ी उसकी माँ थी।

दोनों बारिश में भीगते हुए।

किसी गाहक की आस में उनकी नज़रें चारों तरफ़ देख रही थीं।

वह कुछ लेना नहीं चाह रहा था। लॉक-डाउन की वजह से दो दिन पहले ही मण्डी से काफ़ी कुछ ले आया था। अब और लेने का मतलब पैसे और चीज़ों की बर्बादी थी।

नमाज़ के बाद क़ुरआन पढ़ने बैठा तो बार-बार उन भीगते हुए माँ-बेटे के चेहरे उसे बेचैन करने लगे।

उसके दिल से बार-बार एक आवाज़ उभर रही थी...

क्या फ़ायदा इस इबादत का ?

जब तुम ग़रीबी में पिस्ते हुए दो मजबूर इन्सानों की मजबूरी देख कर भी नहीं पिघल सके।

नमाज़ और तिलावत तो अल्लाह का मामला है।

वह क़ुबूल करे या न करे, उसकी मर्ज़ी।

लेकिन क्या इस बेहिसी पर तुम्हें माफ़ी मिल जाएगी ?

सारा दिन फ़ेसबुक पर बैठ कर इन्सानियत के लेक्चर देते हो।

हमदर्दी भरी पोस्टें लगाते हो।

लेकिन क्या ख़ुद तुम से बड़ा ख़ुद ग़रज़ कोई हो सकता है ?

उसका ज़मीर उसे कोस रहा था।

उसने क़ुरआन मजीद को अदब से बन्द किया और उठ कर रेन-कोट पहनने लगा।

''कहाँ जा रहे हैं ?'' बीवी ने परेशान होकर पूछा।

वह आइसोलेशन के मामले में बहुत सख़्त थी।

बच्चों को भी नहीं निकलने देती थी।

निकलना बहुत ज़रूरी हो तो मॉस्क, सेनिटाइज़र, डिस्पोज़ेबल ग्लव्स यानी हर चीज़ की पाबन्दी करना होती थी।

''कहीं नहीं। गली के कोने तक।'' वह पर्स जेब में रखते हुए बोला, फिर पूरी बात बताई। उसकी आवाज़ भर्रा गई थी।

''कौन आएगा इस पॉश इलाक़े में, बारिश में उन से सब्ज़ी या फ्रूट ख़रीदने ? वह भीख मांगने वाले नहीं हैं। मेहनत करने वाले हैं वरना बारिश में न भीग रहे होते।

''ठहरिए। आप एक अच्छे काम के लिए जा रहे हैं। मेरा शेयर भी मिला लीजिए।''

तभी कमरे से बेटे की आवाज़ आई जो यह सब सुन रहा था, ''पापा! मेरी तरफ़ से भी।'' उसने बाप की तरफ़ कुछ पैसे बढ़ा दिये।

वह कुछ बोल ही नहीं पा रहा था। बस आँसू निकल रहे थे।

वह दुआ माँग रहा था कि कहीं वह लोग चले न गये हों।

वह बाहर निकल आया।

बारिश की बस इक्का-दुक्का बूँदें ही गिर रही थीं।

गली के कोने पर माँ-बेटा उसी तरह फल और सब्ज़ी की मेज़ के आगे भीगे हुए खड़े थे।

कोई गाहक दूर-दूर तक नहीं था।

पास जाकर वह बच्चे से हर चीज़ का भाव पूछने लग गया। तभी वह बूढ़ा भी कहीं से आ पहुँचा।

''भाई! इन सब फ्रूट्स और सब्ज़ी का क्या लगाओगे ?'' उसने पूछा।

''तौल दूँ साहब ?'' वह ख़ुश हो गया था।

औरत भी अपने मियाँ के पास आ गई थी और हैरत से देख रही थी।

''नहीं! ऐसे ही बता दो हिसाब करके। अपना मुनाफ़ा भी मिला लो।''

''मुझे सारा सामान लेना है। मण्डी नहीं जा सकता। कोरोना फैला हुआ है।''

वह थोडी देर हिसाब लगाता रहा, फिर बोला, ' हज़ार बनते हैं।''

''कुछ काम नहीं करोगे ?'' उसने टटोला।

''आप दूसरे गाहक हैं सुबह से। पहला गाहक एक ख़रबूज़ा लेकर गया था। ऐसा कीजिए! दो सौ कम दे दीजिए। मेरा भी वक़्त बच जाएगा''

उसने पर्स से नोट निकाले और उसकी तरफ़ बढ़ा दिये।

''ठीक है। जितने तुम ने पहले कहे हैं उतने में ही दे दो।''

''थैले में डाल दूँ ? अलग-अलग ?''

''नहीं। इन्हें इधर ही रहने दो। अब यह सामान मेरा हुआ। चाहो तो ग़रीबों को दे देना और चाहो तो बेच देना। मेरी तरफ़ से छूट है।''

उसकी बीवी बोली, ''भाई! कुछ तो लेते जाइए।''

उसने आसमान की तरफ़ इशारा किया।

''मेरा सौदा अल्लाह से हो गया है। अब इस में से मैं कुछ नहीं ले सकता।''

वह तेज़ी से मुड़ गया। आँसू उसकी आँखों से तेज़ी से बहे जा रहे थे। यह डर और शुक्राने के आँसू थे।

घर पहुँचते-पहुँचते वह मुँह पर हाथ रखे दहाड़ें मार कर रोने लगा।

''मुझे माफ़ कर दे मेरे मालिक। मेरी किसी ग़लती पर पकड़ न करना। मुझे तूने सब कुछ दिया है। इतना कि सारी ज़िन्दगी शुक्र करता रहूँ तो भी न कर सकूँ और एक तरफ़ तेरे यह बंदे है। इनके हाल पर रहम कर मेरे अल्लाह! इन्हें बख़्श दे।''

वह मुँह पर हाथ रखे चीख़ों का गला घोंटता रहा। घर के अन्दर पहुँचा तो बीवी तीन रेन-कोट लिये खड़ी थी।

उसका चेहरा आँसुओं से भीगा देख कर बीवी की आँखें भी भर आई।

''यह उन्हें दे आइए। हमें तो वैसे भी अभी ज़रूरत नहीं है। कोरोना ख़त्म होगा तो और ले आएंगे।''

वह वापस गया और रेन-कोट भी उन्हें दे आया।उसे अपनी रूह और दिल से बोझ उतरता लग रहा था और वह अल्लाह से माफ़ी माँग कर ख़ुद को हलका-फुलका महसूस कर रहा था।

करबला में ईमान और तौहीद के जलवे

■ हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी

तौहीद का अक़ीदा एक मुसलमान की अक़्ल और सोच पर ही असर नहीं डालता बल्कि यह अक़ीदा उसकी हर सिचुएशन और उसकी ज़िन्दगी के हर एंग्ल पर असर डालता है।

ख़ुदा कौन है ? कैसा है ? उसकी मारेफ़त एक मुसलमान की निजी-समाजी ज़िन्दगी और उसके फ़ैसलों पर क्या असर डालती है ? इन सभी अक़ीदों का असर और रोल एक सच्चे मुसलमान की प्रेक्टिकल ज़िन्दगी में आसानी से देखा जा सकता है।

हर इन्सान के लिए ज़रूरी है कि उस ख़ुदा पर अक़ीदा रखे जो सच्चा है और अपने दावों व वादों को किसी भी हाल में नहीं तोड़ता। जिसका हुक्म मानना वाजिब है और जिसकी नाराज़गी इन्सान को जहन्नमी बना देती है। वह ऐसा ख़ुदा है जो हर हाल में इन्सान को देख रहा है, इन्सान का छोटे से छोटा काम भी उससे छुपा हुआ नहीं है..... यह सारे अक़ीदे जब ''यक़ीन'' के साथ इन्सान अपना लेता है तो यह अक़ीदे उसकी ज़िन्दगी में एक बहुत बड़ा रोल निभाते हैं। तौहीद का मतलब सिर्फ़ एक नज़रिया और सोच नहीं है बल्कि ''इताअत में तौहीद'' और ''इबादत में तौहीद'' भी उसी का असर है।

इमाम हुसैन[अ०] पहले ही से अपनी शहादत के बारे में जानते थे बल्कि उन्हें एक-एक चीज़ के बारे में पता था। अल्लाह के रसूल[स०] ने भी आपकी शहादत के बारे में पहले ही बता दिया था। लेकिन पहले से ही सब कुछ पता होने के बाद भी इमाम हुसैन के मिशन पर कोई छोटा सा असर भी नहीं पड़ा। इमाम हुसैन जिहाद और शहादत के इस मैदान में आगे बढ़ने से ज़रा से भी नहीं हिचकिचाए और न ही डरे बल्कि पहले से पता होने की वजह से शहादत के लिए इमाम हुसैन का शौक़ पहले से भी ज़्यादा हो गया था। इमाम हुसैन[अ०] ने अपने भरपूर ईमान और यक़ीन के साथ करबला में जिहाद किया था और सच्चे आशिक़ों के अन्दाज़ में ख़ुदा से मुलाक़ात के लिए आगे बढ़े थे।

कई बार आपके रिश्तेदारों ने हमदर्दी में आपको इराक़ और कूफ़ा जाने से रोका भी था और कूफ़ियों की बेवफ़ाई भी याद दिलाई थी। यह सब चीज़ें ऐसी थीं जो अपनी जगह किसी भी दूसरे इन्सान के दिल में शक या डर पैदा करने के लिए काफ़ी थीं लेकिन इमाम हुसैन[अ०] अपने मज़बूत अक़ीदे, पक्के ईमान और अपने मूवमेन्ट के इस्लामी मूवमेंट होने की वजह से मायूसी और शक पैदा करने वाली चीज़ों के सामने डट कर खड़े हो गये थे। आपकी नज़र में ख़ुदा की मर्ज़ी हर चीज़ से ऊपर थी, इसलिए जब आपके चचा इब्ने अब्बास ने आपको मश्वरा दिया कि इराक़ जाने के बजाए किसी दूसरी जगह चले जाइए और बनी उमैय्या से टक्कर मत लीजिए तो इमाम हुसैन[अ०] ने बनी उमैय्या की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया थाः ''मैं रसूले ख़ुदा के रास्ते पर और उनके हुक्म पर घर से निकल रहा हूँ। हम सब ख़ुदा की तरफ़ से आए हैं और हमें उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।''

इस तरह आपने अल्लाह के रसूल[स०] के हुक्म और ख़ुदा की तरफ़ लौटने के बारे में अपना पक्का फ़ैसला सबको सुना दिया था क्योंकि आपको अपने रास्ते के हक़ पर होने और ख़ुदा के वादों के सच्चे होने का पूरा यक़ीन था।

''यक़ीन'' ख़ुदा के दीन और उसकी भेजी हुई शरीअत पर पक्के अक़ीदे का नाम है। यक़ीन की ताक़त जिसके पास भी हो वह इंसान अपने रास्ते पर डटा रहता है।

आशूरा का दिन ख़ुदा पर यक़ीन का दिन था। अपने रास्ते के हक़ होने का यक़ीन, दुश्मन के बातिल होने का यक़ीन, क़यामत

और हिसाब-किताब के हक़ होने का यक़ीन, मौत और ख़ुदा से मुलाक़ात का यक़ीन... इन सारी चीज़ों के लिए इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों के दिलों में कमाल का यक़ीन था और यही यक़ीन उनको डटे रहने में मदद दे रहा था।

''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' आमतौर पर किसी इन्सान के मरने या शहीद होने पर कहा जाता है लेकिन इमाम हुसैन[अ०] के यहाँ यह इस दुनिया के एक अहम क़ानून को याद दिलाता है और वह यह है कि ''दुनिया का बनना और आगे चलकर इसका मिटना सब कुछ ख़ुदा के लिए और उसकी तरफ़ से है। आपने करबला पहुँचने तक कई बार ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' को दोहराया था ताकि यह अक़ीदा आपके मिशन को एक सही डायरेक्शन दे सके।

आपने सअ्लबिया पहुँचने पर हज़रत मुस्लिम और हानी की शहादत की ख़बर सुनने के बाद कई बार ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' कहा था और फिर उसी जगह ख़्वाब में देखा कि एक सवार यह कह कर रहा है कि ''यह क़ाफ़िला तेज़ी के साथ आगे बढ़ रहा है और मौत भी तेज़ी के साथ इन लोगों की तरफ़ बढ़ रही है।''

जब आप जागे तो अपना ख़्वाब अपने बेटे हज़रत अली अकबर[अ०] को सुनाया तो उन्होंने आपसे पूछा, ''बाबा! क्या हम लोग हक़ पर नहीं हैं ?''

आपने जवाब दिया, ''क़सम उस ख़ुदा की जिसकी तरफ़ सबको लौट कर जाना है, हम हक़ पर हैं।'

फिर अली अकबर[अ०] ने कहा, ''तब मौत से क्या डरना ?''

सफ़र के रास्ते में ख़ुदा की तरफ़ लौटने के अक़ीदे को बार-बार समझाने का मक़सद यह था कि अपने साथियों और घर वालों को एक बड़ी क़ुर्बानी के लिए तैयार कर सकें, इसलिए कि सही और मज़बूत अक़ीदे के बग़ैर एक मुजाहिद इस्लाम को बचाने के लिए आख़िर तक डटा नहीं रह सकता।

करबला वालों को अपने रास्ते और अपने मक़सद की भी भरपूर पहचान थी और इस बात का भी यक़ीन था कि इस रास्ते में जिहाद और शहादत ही उनकी इस्लामी ड्युटी है और यही इस्लाम के फ़ायदे में है। उनको ''ख़ुदा'' और ''आख़िरत'' पर भी ख़ूब यक़ीन था और यही यक़ीन उनको एक ऐसे मैदान की तरफ़ ले जा रहा था जहाँ उनको जान देना थी और क़ुर्बान होना था।

जब वहब बिन अब्दुल्लाह दूसरी बार जंग के लिए निकले तो कहा कि मैं ख़ुदा पर ईमान लाने वाला और उस पर यक़ीन रखने वाला हूँ।

ख़ुदा की मदद में तौहीद और सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा करना, अक़ीदे के अमल पर असर का एक नमूना है। इमाम हुसैन[अ०] का भरोसा सिर्फ़ ख़ुदा पर था, न लोगों के लेटर्स पर, न उनकी तरफ़ से मदद के एलान पर और न ही उनकी तरफ़ आपके लिए लगाए जाने वाले नारों पर।

जब हुर ने आपके क़ाफ़िले का रास्ता रोका था तो आपने अपने मूवमेन्ट, यज़ीद की बैअत से इनकार और कूफ़ियों के लेटर्स का ज़िक्र किया था और आख़िर में फ़रमाया था, ''मेरा भरोसा ख़ुदा पर है और उसने मुझे तुम लोगों का मोहताज नहीं बनाया है।

आगे चलते हुए जब अब्दुल्लाह मश्रिक़ी से मुलाक़ात की और उसने कूफ़े के हालात बताते हुए कहा कि लोग आपके ख़िलाफ़ जंग करने के लिए इकटठा हो गए हैं तो आपने जवाब में फ़रमाया था, ''मेरे लिए मेरा ख़ुदा ही काफ़ी है''।

आशूर की सुबह जब यज़ीद की फ़ौज ने इमाम के ख़ेमों की तरफ़ हमला करना शुरु किया तो उस वक़्त भी आपके हाथ आसमान की तरफ़ उठे हुए थे और ख़ुदा से मुनाजात करते हुए यूँ फ़रमा रहे थे, ''ख़ुदाया! हर सख़्ती और मुश्किल में मेरी उम्मीद और मेरा भरोसा तू ही है। ख़ुदाया! जो भी मेरे साथ होता है उसमें मेरा सहारा तू ही होता है। ख़ुदाया! कितनी सख़्तियों और मुश्किलों में तेरी बारगाह में आया और तेरी तरफ़ हाथ उठाए हैं और तूने उन मुश्किलों को दूर किया है।''

इमाम हुसैन की यह हालत और यह जज़्बा क़यामत पर और ख़ुदा की तरफ़ से मिलने वाली मदद पर आपके दिल से उठने वाले यक़ीन का एक नमूना है।

इस्लामी टीचिंग्स का असली मक़सद भी लोगों को ख़ुदा के क़रीब लाना ही है। यह बात करबला के शहीदों की ज़ियारतों, ख़ास कर इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत में बार-बार आई है। अगर ज़ियारत के आदाब को देखा जाए तो उनका मक़सद भी ख़ुदा से क़रीब होना ही है और यही तौहीद है।

इमाम हुसैन[अ०] की एक ज़ियारत में ख़ुदा से हम यूँ कहते हैं: ''ख़ुदाया! कोई इन्सान किसी बन्दे की नेमतों और उसकी तरफ़ से मिलने वाली चीज़ों के लिए तैयार होता है और वसीले तलाश करता है लेकिन ख़ुदाया मेरी तैयारी और मेरा सफ़र तेरे लिए और तेरे वली की ज़ियारत के लिए है और इस ज़ियारत के ज़रिये मैं तुझ से क़रीब होना चाहता हूँ और इनाम की उम्मीद सिर्फ़ तुझ से रखता हूँ।

इसी ज़ियारत के आख़िर में पढ़ने वाला कहता है, ''ख़ुदाया! मेरे सफ़र का मक़सद सिर्फ़ तू है और जो कुछ तेरे पास है मैं बस वही चाहता हूँ।''

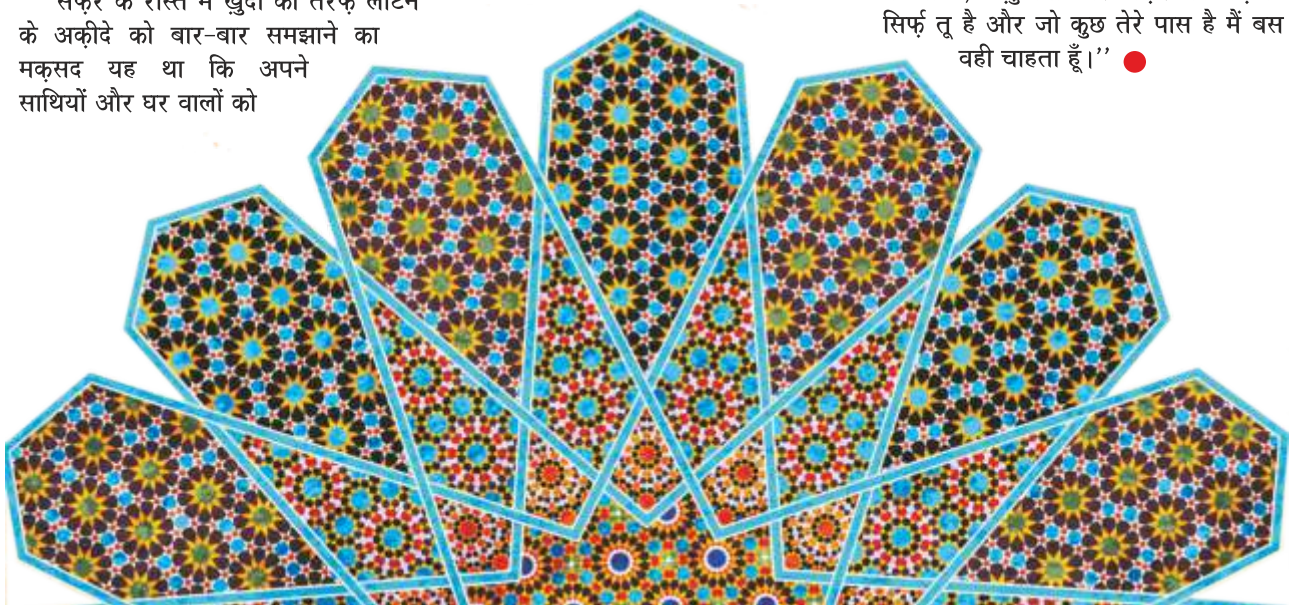

किचन

recipe

पालक	आधा किलो
कॉटेज पनीर	200 ग्राम
नमक	ज़ायक़े के हिसाब से
प्याज़	1 पीस
टमाटर का पेस्ट	1 प्याली
पिसी लाल मिर्च	1 चाय का चम्मच
हल्दी	1/2 चाय का चम्मच
कटी काली मिर्च	1 चाय का चम्मच
गर्म मसाला पिसा	1/2 चाय का चम्मच
डबल रोटी का चूरा	1/2 प्याली
कार्न फ़्लोर	2 खाने के चम्मच
फ़्रेश क्रीम	4 खाने के चम्मच
मेथी	1 खाने का चम्मच
हरी मिर्च	2-3 पीस
तेल	ज़रूरत भर

तरकीब

पालक को चॉप करके धो लीजिए और उबलते हुए पानी में तीन से चार मिनट तक उबालने के बाद छलनी में डाल दीजिए।

इसके ऊपर बिल्कुल ठंडा पानी बहाकर अच्छी तरह से छानकर सुखा लीजिए।

अब चॉपर में पालक और हरी मिर्चें डालकर चॉप कर लीजिए।

फिर इस में नमक, कार्न फ़्लोर और डबल रोटी का चूरा डालकर अच्छी तरह से मिला लीजिए।

इसके साथ ही कॉटेज पनीर में नमक और काली मिर्च मिलाकर उसकी छोटी-छोटी बॉल्स बना लीजिए।

फिर पालक के कोफ़्ते बनाकर उनके बीच कॉटेज चीज़ की बाल्स रखकर बन्द कर दीजिए और कुछ देर के लिए फ़्रिज में रख दीजिए।

अब एक पैन में तेल डालकर इन कोफ़्तों को इतनी देर तक फ़्राई कीजिए कि यह सुनहरे हो जाएं।

फिर उसी पैन में तेल कम करके उस में बारीक कटी हुई प्याज़ फ़्राई कर लीजिए और फिर उसे निकालकर अलग रख लीजिए।

अब उसी तेल में लहसुन डालकर कुछ देर फ़्राई कीजिए और फिर टमाटर का पेस्ट, नमक, लाल मिर्च, हल्दी और फ़्राई की हुई प्याज़ अच्छी तरह से मिला लीजिए और इतनी देर तक पकाइए कि ग्रेवी गाढ़ी हो जाए।

आख़िर में इसमें क्रीम, गर्म मसाला और मेथी डालकर हल्की आंच पर दम पर रख दीजिए।

जब तेल अलग हो जाए तो चूल्हे से उतार लीजिए।

डिश में निकाल कर उसमें फ़्राई किए हुए कोफ़्ते डालकर गर्मा गर्म रोटी के साथ सर्व कीजिए और ज़ायेक़ेदार डिश के मज़े लीजिए।

पालक चीज़ कोफ़्ता

गोश्त	आधा किलो
खड़ी मूँग	डेढ़ प्याली
पिसा अदरक-लहसुन	1 खाने का चम्मच
प्याज़	2 पीस
पिसी लाल मिर्च	1 खाने का चम्मच
हल्दी	1 खाने का चम्मच
सफ़ेद ज़ीरा	1 खाने का चम्मच
टमाटर	2-3 पीस
हरी मिर्च	3-4 पीस
तेल	आधी प्याली
नमक	ज़ायक़े के हिसाब से

मूँग गोश्त

तरकीब

सबसे पहले मूँग को साफ़ धोकर तीन प्याली गर्म पानी में एक घंटे के लिए भिगो दीजिए।

साथ ही प्याज़, टमाटर और हरी मिर्च बारीक-बारीक काट लीजिए।

पैन में कूकिंग आयल को धीमी आंच पर तीन से चार मिनट तक गर्म कीजिए और प्याज़ सुनहरा होने तक भून लीजिए।

अब इस में अदरक, लहसुन, लाल मिर्च, हल्दी, टमाटर और गोश्त डालकर अच्छी तरह से मिक्स कर लीजिए और धीमी आंच पर पकने के लिए रख दीजिए।

जब पानी ख़ुश्क हो जाए तो तेल के अलग होने तक अच्छी तरह से भून लीजिए और भिगोए हुए मूँग को पानी समेत इस में मिला दीजिए।

फिर अच्छी तरह से मिक्स करने के बाद हल्की आंच पर इतनी देर तक पकाइए कि गोश्त पूरी तरह से गल जाए।

सुलह से जंग तक

■ अल्लामा अली नक़ी नक़वी

अल्लाह के रसूल[स०] की ज़िन्दगी में हमें तरह-तरह की बातें नज़र आती हैं जो एक-दूसरे से टकराती हुई दिखाई पड़ती हैं। हज़रत अली[अ०] की ज़िन्दगी में भी ऐसी ही मिसालें मिलती हैं।

अब ऐसे में अगर दो अलग-अलग इन्सानों में अलग-अलग हालात के हिसाब से अलग-अलग चीज़ें नज़र आएं तो इसको उन दोनों इंसानों के मिज़ाज या सोच का फ़र्क़ समझना भला कैसे सही हो सकता है।

इसी फ़ार्मूले पर आगे बढ़ें तो फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि इमाम हसन[अ०] अपने मिज़ाज के हिसाब से अमन पसन्द थे और इमाम हुसैन[अ०] अपने मिज़ाज के हिसाब से जंग को पसन्द करते थे।

ऐसा सोचना सिरे से ग़लत है बल्कि इसके बजाए हमें यह समझना चाहिए कि उन दोनों इमामों के वक़्त के हालात ही कुछ ऐसे थे कि इमाम हसन[अ०] ने अपने ज़माने के हालात के हिसाब से सुलह करना सही समझा और इमाम हुसैन[अ०] अपने वक़्त के हालात के हिसाब से जंग करना ठीक समझा। इसमें जज़्बात या इमोशंस का कोई रोल नहीं था।

यही वह सच्चाई है जिसके बारे में अल्लाह के रसूल[स०] ने अलग-अलग तरह से पहले ही बता दिया था। कभी इस तरह कहाः ''यह मेरे दोनों बेटे इमाम हैं, चाहे खड़े हों और चाहे बैठे हों''।

उस वक़्त की दुनिया इस बात को नहीं समझ सकती थी कि इमाम कहने के साथ ''बैठे रहें या खड़े रहें'' किस लिए कहा जा रहा है? इमामत में उठने और बैठने का क्या मतलब?

लेकिन जब वक़्त ने पिछली हिस्ट्री पर पड़े पर्दे को हटाया तो समझ में आया कि अल्लाह के रसूल[स०] पिछले हालात को सामने रखकर आगे के हालात का नक़्शा देख रहे थे कि एक सुलह करके बैठ जाएगा और एक तलवार लेकर खड़ा हो जाएगा। कुछ लोग इमाम हसन[अ०] की सुलह पर उलटे-सीधे सवाल करेंगे और कुछ लोग इमाम हुसैन[अ०] की जंग पर।

अल्लाह के रसूल[स०] ने इसी लिए पहले ही एलान कर दिया था कि यह दोनों इमाम[अ०] हैं, चाहे खड़े हों और चाहे बैठे हों। यानी हसन[अ०] सुलह करके बैठ जाए तो एतेराज़ न करना और हुसैन[अ०] तलवार लेकर खड़ा हो जाए तो भी एतेराज़ न करना। वह बैठना भी ख़ुदा के हुक्म से होगा और यह खड़ा होना भी ख़ुदा के हुक्म से होगा। वह उस वक़्त के हालात की वजह से होगा और यह इस वक़्त के हालात की वजह से।

एक दिन हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[अ०] अपने बाबा अल्लाह के रसूल[स०] के पास दोनों अपने दोनों बेटों को लेकर आईं और बोलींः ''बाबा जान! यह दोनों बच्चे आए हैं। इन्हें कुछ दे दीजिए!''

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया, ''इन्हें किसी और चीज़ की क्या ज़रूरत है। इन में तो मेरी सिफ़तें पहले से ही आ चुकी हैंः हसन[अ०] में मेरा हिल्म है और मेरी सरदारी। जबकि हुसैन[अ०] में मेरी बहादुरी, हिम्मत और सख़ावत है।''

ऐसा लगता है कि वक़्त के लिहाज़ से जिसको जिस सिफ़त का मालिक बनना था उसी सिफ़त को अल्लाह के रसूल[स०] ने उससे जोड़ दिया ताकि उस सिफ़त से जो कारनामा भी सामने आए उस पर कोई मुसलमान सवाल न उठा सके।

अब इसका मतलब यह हुआ कि अल्लाह के रसूल[स०] कह रहे थे कि हसन[अ०] की सुलह को उनके मिज़ाज का नाम मत देना बल्कि वह जो कुछ भी करेंगे मेरे हिल्म से करेंगे।

अल्लाह के रसूल[स०] की इस बात का मतलब बिल्कुल साफ़ है कि अगर उस वक़्त मैं होता तो मैं भी वही करता जो हसन[अ०] करेंगे।

इसी तरह हुसैन[अ०] की जंग को हुसैन[अ०] के मिज़ाज का नाम मत देना बल्कि वह जो कुछ भी करेंगे मेरी बहादुरी से करेंगे। इसका मतलब यह हुआ कि उस वक़्त अगर मैं होता तो मैं भी वही करता जो हुसैन[अ०] करेंगे।

अब अगर कोई इमाम हसन[अ०] की सुलह पर सवाल उठाता है तो वह अल्लाह के रसूल[स०] के हिल्म पर सवाल उठा रहा है और इसी तरह इमाम हुसैन[अ०] की जंग पर अगर कोई सवाल उठा रहा है तो वह असल में अल्लाह के रसूल[स०]

की हिम्मत व बहादुरी पर सवाल उठा रहा है।

सच्चाई यही है कि इमाम हसन[अ०] ने सुलह करके, इमाम हुसैन[अ०] के जिहाद के लिए ज़मीन तैयार कर दी थी। अगर वह सुलह उस वक़्त न होती तो उसके बाद जिहाद का यह वक़्त भी नहीं आ सकता था क्योंकि इस्लाम में जंग मजबूरी की हालत होती है। जब तक उसूलों को बचाते हुए सुलह की जा सकती हो उस वक़्त तक जंग करना ग़लत है। इस्लामी क़ानून के हिसाब से सुलह का दर्जा जंग से पहले है। अगर इमाम हसन[अ०] सुलह न कर चुके होते तो इमाम हुसैन[अ०] के लिए जंग का मौक़ा पैदा ही न हो पाता।

इमाम हसन[अ०] की सुलह की शर्तों पर नज़र डाली जाए तो पता चलेगा कि उस सुलह की शर्तों में उस मिशन का पूरी तरह से बचाव किया गया था जिसके लिए बाद में करबला की जंग हुई थी। यह न देखिये कि बाद में शर्तों को तोड़ दिया गया। बाद में तो हुदैबिया की सुलह की शर्तों को भी तोड़ दिया गया था। जब सुलह का एग्रीमेन्ट हुआ और उसे तोड़ा गया तब ही तो दुश्मन पर इलज़ाम लगा कि उसने सुलह की शर्तों को तोड़ दिया है। अगर कोई ऐसा एग्रीमेन्ट ही न होता तो यह शर्तें तोड़ने का इल्ज़ाम ही कैसे लगता। जब हुदैबिया की शर्तों को तोड़ा गया तो मुसलमानों ने मक्के पर चढ़ाई करके उसे जीत लिया था। इसी तरह जब इस सुलह को तोड़ा गया तो करबला सामने आई।

इससे यह बात समझ में आती है कि उस ज़माने के जो हालात थे उनके हिसाब से इमाम हसन के पीरियड में सुलह करना ही इस्लामी ड्युटी थी और इमाम हुसैन के पीरियड में जंग करना। वह वक़्त का हिस्सा इमाम हसन[अ०] के हिस्से में आया और यह वक़्त इमाम हुसैन[अ०] के हिस्से में आया। अगर उलटा होता यानी 41 हिजरी में वक़्त के इमाम, इमाम हुसैन[अ०] होते तो वह भी सुलह करते और अगर 61 हिजरी में इमाम हसन[अ०] होते तो वह भी जिहाद करते।

इमाम हसन[अ०] जानते थे कि सुलह करना ही मेरा जिहाद है। इसलिए उनकी सुलह भी ''शुजाअत'' (बहादुरी) थी और इमाम हुसैन[अ०] का जिहाद यज़ीद के ख़िलाफ़ तलवार खींचना था और यही उनकी शुजाअत थी क्योंकि जिस तरह उलमा ने बताया है कि ''शुजाअत'' हर मौक़े पर तलवार लेकर आगे बढ़ जाने का नाम नहीं है बल्कि शुजाअत ''ग़ज़ब और ग़ुस्से'' के होते हुए अक़्ल के अंदर रहते हुए फ़ैसला करने का नाम है और यही वह जगह है जहाँ इन्सान के अन्दर ''ग़ज़ब की ताक़त'' बैलेंस में बनी रहती है। अगर इन्सान ने ग़लत जगह ग़ुस्से से काम लिया और क़दम आगे बढ़ा दिया तो उसे ''तहव्वुर'' कहा जाता है और अगर सही वक़्त पर भी ग़ुस्से से काम न लिया और कमज़ोरी दिखाई तो इसका नाम ''जुब्न'' है। यह दोनों चीज़ें यानी तहव्वुर और जुब्न ''शुजाअत'' के ख़िलाफ़ हैं। शुजाअत यह है कि ग़लत वक़्त पर क़दम आगे न बढ़े और वक़्त आने पर चुप न बैठा जाए। इन दोनों पहलुओं को इमाम हसन[अ०] व इमाम हुसैन[अ०] ने करके दिखाया और इस तरह दोनों ने मिल कर ''शुजाअत'' की भरपूर तस्वीर खींच दी।

इमाम हुसैन[अ०] ने भी सुलह और अमन की कोशिश में कोई कमी नहीं की थी। यह तो उनके दुश्मन का तरीक़ा ही कुछ ऐसा था कि उसने सारी शर्तों को पैरों तले रौंद दिया था। अगर दुश्मन शर्तों को मान लेता तो करबला भी सुलह पर ख़त्म होती। इसके बाद किसी को यह कहने का क्या हक़ है कि इमाम हसन[अ०] का मिज़ाज यह था कि वह अमन पसन्द थे और इमाम हुसैन[अ०] जंग को पसन्द करते थे।

वहाँ अमीरे शाम मुआविया ने सादा काग़ज़ भेज दिया था कि इमाम हसन जो चाहें शर्तें लिख दें। इमाम ने शर्तें लिख दीं और अमीरे शाम ने उनको मन्ज़ूर कर लिया।

दुनिया ग़लत कहती है कि इमाम हसन[अ०] ने अमीरे शाम की बैअत की थी। बैअत तो असल में उसने की जिसने शर्तें मानीं। इमाम हसन[अ०] ने तो बैअत ली थी, बैअत की नहीं थी।

इमाम हुसैन[अ०] के सामने था यज़ीद और ऐसे आदमी को आले मोहम्मद में से कोई भी क़ुबूल नहीं कर सकता था।

इमाम हुसैन[अ०] ज़िन्दगी के उस एक दिन यानी आशूरा को ही हुसैन[अ०] नहीं थे बल्कि वह अपनी ज़िन्दगी के 57 साल में हर दिन हुसैन[अ०] थे। फिर आख़िर सिर्फ़ एक दिन के रोल को सामने रख कर क्यों फ़ैसला किया जाता है। आख़िर उस एक दिन को निकाल कर जो 57 साल हैं वह उनकी ज़िन्दगी से कैसे निकाले जा सकते हैं ? इसी तरह इमाम हसन[अ०] सिर्फ़ एक दिन, जब सुलह के एग्रीमेन्ट पर साइन किये थे सिर्फ़ उसी वक़्त इमाम हसन[अ०] नहीं थे। हसन[अ०] नाम तो उस पूरी ज़िन्दगी का था, इसलिए आपकी पूरी ज़िन्दगी को सामने रख कर फ़ैसला करना सही होगा।

ज़िन्दगी का सिर्फ़ एक हिस्सा सामने रख कर इस्लाम के दुश्मनों ने इमाम हुसैन की यह तस्वीर खींची है कि आपके एक हाथ में तलवार है और एक हाथ में क़ुरआन, जिस तरह यह तस्वीर अधूरी और ग़लत है उसी तरह इमाम हसन[अ०] के बारे में जो तस्वीर खींची जाती है वह भी ग़लत है और यह ग़लती इतनी आम है कि उनका नाम लेने वाले और उनके रास्ते पर चलने वाले भी उनका वही सिर्फ़ एक दिन का रोल जानते हैं और उसी को दुनिया के सामने रखते भी हैं।

इसलिए अपनी स्पीच में गर्मी पैदा करने के लिए और किसी बड़े मैदान में क़दम बढ़ाने के लिए या ख़ून में जोश पैदा करने के लिए इमाम हुसैन[अ०] का नाम लेते हैं और उनके कारनामे को याद दिलाते हैं, चाहे मक़सद सही हो या ग़लत और जो अपनी पूरी उम्र शहादत से एक दिन पहले तक जंग को टालते रहे वह जैसे हुसैन[अ०] का रोल नहीं है बल्कि किसी और का है। पूरी तस्वीर तो उसी वक़्त होगी जब पूरी ज़िंदगी सामने रख कर तस्वीर खींची जाएगी।

बच्चों के खेलने के लिए

प्ले-डो

बनाईये

परवरिश

■ आफ़िया मक़बूल

बच्चा किसी मुल्क या किसी भी कम्युनिटी का हो उसकी कुछ नेचुरल आदतें हमेशा और हर ज़माने में एक-सी होती हैं। जैसे हम जो खेल बचपन में ख़ुद खेल चुके होते हैं उसका शौक़ हम अपने बच्चों में भी उसी तरह देखते हैं।

ऐसा ही एक खेल जो हर मुल्क और हर सोसाइटी के बच्चों में कॉमन तौर पर देखने में आया है वह है गीली मिट्टी से तरह-तरह की चीज़ें बनाकर खेलना... इसमें कोई शक नहीं है कि यह खेल सब बच्चों को बहुत ज़्यादा पसन्द होता है। गीली मिट्टी को छूना और फिर उस से अपनी मर्ज़ी की चीज़ें बनाने में कामयाब हो जाना बच्चों के अन्दर अजीब सी ख़ुशी और एहसास पैदा करता है।

बहुत से बच्चे तो मिट्टी से तरह-तरह के खिलौने और चीज़ें बनाने में इतने मगन हो जाते बल्कि इतने खो जाते हैं कि आसपास के माहौल को बिल्कुल भुलाकर ख़ुद से बातें करते और गुनगुनाते नज़र आते हैं। वह अपने आसपास एक ख़याली दुनिया बसाकर उसमें खो जाते हैं और उसमें न समझ में आने वाली आवाज़ें निकालते रहते हैं। और मुस्कुराया करते हैं जिस से साफ़ समझ में आता है कि बच्चा बहुत ख़ुश और आराम से खेल में मगन है। बल्कि कई बार आपने खेलते हुए बच्चे के मुँह से राल टपकती भी देखी होगी। यह सब उसकी ख़ुशी और सुकून की निशानियाँ हैं।

अब प्रॉब्लम यह है कि मिट्टी से खेलना बच्चे की सेहत के लिए ख़तरनाक भी हो सकता है, कई बीमारियों के जर्म्स और इन्फ़ेक्शन उनकी नन्हीं से जान को लग सकते हैं जिनमें मोशन, पेट की ख़राबी, कीड़े और टिटनेस जैसी बीमारियों के इन्फ़ेक्शन हो सकते हैं। इसलिए जैसे ही कोई पढ़ी-लिखी माँ अपने बच्चे को मिट्टी से खेलते देखती है तो पागलों की तरह चीख़ने- चिल्लाने लगती है। बच्चे को घसीट कर बल्कि दो-चार तमांचे लगाकर उसकी पसन्द की सबसे अच्छी चीज़ यानी मिट्टी उठाकर दूर फेंकती है और उसे घसीटते हुए बाथरूम तक ले जाती है। बच्चा अपनी प्यारी सी दुनिया से बिछड़ कर रोता-धोता और चीख़ता-चिल्लाता रह जाता है।

माँएं सोचती हैं कि मिट्टी से खेलना बच्चे के लिए हद से ज़्यादा ख़तरनाक है इसलिए वह उन्हें सख़्ती से रोक देती हैं।

आज के नये ज़माने में दूसरी आसानियों और सहूलतों की तरह बच्चों के इस प्यारे खेल के लिए भी ''प्लेइंग-डो'' के नाम से तरह-तरह के रंगों में और ख़ूबसूरत डिब्बों में बन्द प्लास्टिक की ''मिट्टी'' के टुकड़े बाज़ार में बिकते हैं। जिसे पैसों वाले माँ-बाप तो अपने बच्चों को ख़रीद कर दे सकते हैं लेकिन मिडिल और ग़रीब और ज़्यादा बच्चों वाले माँ-बाप महंगाई के इस ज़माने में अपने बच्चों का यह शौक़ पूरा नहीं कर सकते जिसकी वजह से बच्चा एक इन्ट्रेस्टिंग खेल और एक बड़ी ख़ुशी से बहुत दूर हो जाता है क्योंकि गीली मिट्टी से खेलना न सिर्फ़ बच्चे को काफ़ी सुकून देता है बल्कि उसकी स्किल्स को भी उभारता है और उसमें आगे चल कर बड़ा आर्टिस्ट बनने या कोई न कोई ख़ास काम करने वाला कोई भी अच्छा प्रोफ़ेशनलिस्ट बनने का टेलेंट जन्म ले सकता है।

इसका एक बड़ा फ़ायदा तो माँओं को यह भी है कि बच्चे का वक़्त अच्छा गुज़रता है और माँओं को इतना वक़्त मिल जाता है कि वह घर के बाक़ी काम सुकून और इत्मिनान से कर सकें। यूँ तो रोता और चिड़चिड़ाता हुआ बच्चा पूरा घर सर पर उठाए रहता है और सबको परेशान किये रखता है। ख़ुद भी परेशान रहता है और दूसरों के लिए परेशानी खड़ी कर देता है। जिस घर में एक छोटा बच्चा चीख़ रहा हो

वहाँ दूसरे लोग टेंशन-फ़्री होकर और दिमाग़ लगा कर काम नहीं कर सकते। बल्कि घर भर की नज़रें उसी बच्चे पर लगी रहती हैं। कभी तो पड़ोसी भी आकर पूछने पर मजबूर हो जाते हैं कि बच्चा क्यों रो रहा है ? शायद उन्हें बच्चे में कोई इन्ट्रेस्ट नहीं होता बल्कि उन्हें परेशानी अपने डिस्टर्ब होने से हो रही होती है।

इसलिए हम ऐसी माँओं को घर में सेहत और तन्दुरुस्ती का पूरा ध्यान रखते हुए बिल्कुल सेफ़ एंड सेकेयोर और नुक़सान न पहुँचाने वाले ''प्ले-डो'' यानी गीली मिट्टी बनाने का तरीक़ा आपको बताते हैं। इस से आपका बच्चा न सिर्फ़ बिज़ी रहेगा बल्कि ख़ुश होकर जब वह पूरी तरह खेल चुकेगा तो पेट भर कर खाना भी खाएगा और बहुत सुकून की नींद भी सोएगा।

आईये ''प्ले-डो'' बनाते हैं

इसके लिए सारी चीज़ें आपको अपने किचन से मिल जाएंगी। अगर बच्चा थोड़ा छोटा है तो वह ज़रा नर्म और पिलपिला डो पसन्द करेगा ताकि उसकी नर्म-नर्म और नाज़ुक उंगलियाँ उसको अपनी मर्ज़ी के हिसाब से उलट-पलट कर दबा सकें। बल्कि हाथों और मुँह पर लपेट भी सकें क्योंकि ऐसा करना भी बच्चों को बड़ा अच्छा लगता है क्योंकि जब तक बच्चा ख़ुद को लतपत न कर ले तब तक उसे मज़ा ही नहीं आता और उसका खेल पूरा ही नहीं होता।

आईये डो बनाते हैं।

लगीाग आधा किलो मैदा लेकर उसमें थोड़ा सा पकाने का तेल मिला लीजिए।

फिर उसे ज़रूरत भर पानी से गूँध लीजिए।

एक रंग में बनाना हो तो आप खाने का कोई भी रंग इस्तेमाल कर सकती हैं, जैसे हल्दी या ज़र्दा रंग और अगर ज़्यादा रंगों में बनाना हो तो थोड़ा-थोड़ा बाँट कर दो तीन अलग-अलग रंग मिला दीजिए। अगर मार्बल कलर देना चाहें, तो सारे रंगों के मिलाए हुए मैदे को मिला कर थोड़ा सा गूँध दीजिए। जगह-जगह कई रंग नज़र आएंगे और बच्चे के तोड़ने मरोड़ने से अपने आप कई डिज़ाइन बन जाएंगे। जिसे देख कर वह बहुत ख़ुश होगा।

याद रखिये छोटे बच्चों के लिए ज़रा नर्म और बड़े यानी तीन चार साल के बच्चों के लिए ज़रा सख़्त रखिये।

अगर आपको डर हो कि छोटा बच्चा हर चीज़ को अपने मुँह में डाल लेता है तो आप उसमें ज़रा ज़्यादा सा नमक मिला दीजिए। बच्चे बहुत ज़्यादा नमक पसन्द नहीं करते, आपका बच्चा भी डो को मुँह में नहीं डालेगा।

यह नार्मल रंगीन ''डो'' आप किसी प्लास्टिक के डिब्बे में तैयार करके फ़्रिज में भी रख सकती हैं। ●

दूसरों के बच्चों का ध्यान

अगर कोई इन्सान चाहता है कि उसके दुनिया से जाने के बाद उसकी फ़ैमिली और उस के बच्चों के साथ अच्छा बर्ताव किया जाए तो इसका रास्ता यह है कि वह दूसरे मोहताजों और ज़रूरतमन्दों का ख़याल रखे ताकि दूसरे भी उसकी औलाद के साथ वैसा ही सुलूक करें।

हज़रत अली[अ] इसी समाजी क़ानून की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं:

''दूसरों के घर वालों का ध्यान रखो ताकि दूसरे भी तुम्हारे घर वालों का ध्यान रखें।''

शरई अहकाम

सवालः क्या कज़िंस (Cousins) महरम होते हैं ?

जवाबः नहीं! कज़िंस महरम नहीं होते।

सवालः शरीअत के अहकाम यानी नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा बच्चों पर कब वाजिब होते हैं ?

जवाबः बच्चे जब बालिग़ हो जाएं, यानी जबः

लड़की 9 साल क़मरी (या शम्सी 8 साल 2 महीने और बीस दिन लगभग)

लड़का 15 साल क़मरी (या शम्सी 14 साल 7 महीने और 15 दिन लगभग)

पूरे कर ले तो वह बालिग़ हो जाता है और उस ऊपर शरई अहकाम पर अमल करना वाजिब हो जाता है। यानी अब उसके ऊपर सारे वाजिब काम करना और हराम कामों से बचना ज़रूरी हो जाता है जैसे नमाज़, रोज़ा या हिजाब.... वग़ैरा जैसी चीज़ें उस पर वाजिब हो जाती हैं।

(नोटः बालिग़ होने के लिए उम्र से हटकर कुछ दूसरी निशानियाँ भी हैं।)

सवालः मुमय्यिज़ किसे कहते हैं ?

जवाबः जब बच्चा उस उम्र को पहुँच जाए कि अच्छे और बुरे को पहचानने लगे तो ऐसे बच्चे को मुमय्यिज़ कहते हैं।

सवालः मुजतहिद किसे कहते हैं ?

जवाबः जो क़ुरआन व हदीस के ज़रिये शरई अहकाम को समझ सके और हमें बता सके।

सवालः किस मुजतहिद की तक़लीद की जा सकती है ?

जवाबः जो आलम हो और मर्द, बालिग़, आक़िल, शिया इस्ना अशरी, हलालज़ादा, आदिल और ज़िन्दा हो।

सवालः आलम किसे कहते हैं ?

जवाबः जिसके पास दूसरे मुजतहिदों से ज़्यादा इल्म हो।

सवालः यह कैसे तय होगा कि फ़ुलाँ मुजतहिद आलम है ?

जवाबः ऐसा वह इन्सान तय कर सकता है जो या तो ख़ुद मुजतहिद हो या इज्तेहाद के मामलों को समझता हो।

अल-हम्दो लिल्लाह ईरान में ''जामिअ-ए-मुदर्रिसीन'' नाम की एक कमेटी है जो इस बात का एलान करती है कि किस-किसकी तक़लीद की जा सकती है।

सवालः क्या नमाज़ की नियत का ज़बान से अदा करना ज़रूरी है ?

जवाबः नहीं! नियत का ज़बान से अदा करना या दिल में सोचना ज़रूरी नहीं है बल्कि नियत के लिए नमाज़ पढ़ने का इरादा ही काफ़ी है।

सवालः नमाज़ में सही क़राअत के लिए कम से कम किन चीज़ों का ध्यान रखना ज़रूरी है ?

जवाबः नमाज़ की क़राअत में 2 चीज़ों का ध्यान रखना ज़रूरी हैः

1- हुरूफ़ के मख़रज (अदा करने की जगह)

2- ज़बर, ज़ेर, पेश और तश्दीद

- अगर कोई इन चीज़ों का ध्यान नहीं रखता है तो उसकी नमाज़ बातिल है।

सवालः नमाज़ के आख़िर में जो तीन तकबीरें कही जाती हैं क्या वह वाजिब हैं ?

जवाबः नहीं! उन तीनों तकबीरों का कहना वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब है।

सवालः क्या औरत किसी नामहरम के सामने अपना चेहरा खोल सकती है ?

जवाबः अगर मेकअप न किया हो और फ़साद (लोगों की ग़लत नज़र पड़ने) का ख़तरा न हो तो खोल सकती है।

सवालः रुकू की हालत में इन्सान की नज़र कहाँ होना चाहिए ?

जवाबः मुस्तहब है कि दोनों पैरों के बीच में नज़र रखे।

सवालः क़ुरआन मजीद के वाजिब सजदे कितने हैं और किन सूरों में हैं ?

जवाबः क़ुरआन मजीद में चार सूरों में वाजिब सजदे आए हैंः

(1) सूरए नज्म (2) सूरए इक़्रा (3) सूरए अलिफ़ लाम मीम तंज़ील (4) सूरए हा-मीम सजदा

सवालः क्या नमाज़ में क़ुनूत का पढ़ना वाजिब है ?

जवाबः नमाज़ में क़ुनूत पढ़ना मुस्तहब है लेकिन हदीसों में क़ुनूत पढ़ने पर बहुत ज़ोर दिया गया है।

सवालः क्या अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर (दूसरों को अच्छाईयों की तरफ़ बुलाना और बुराईयों से रोकना) वाजिब है ?

जवाबः अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर के लिए कुछ शर्तें हैं उनके साथ वाजिब है।

सवालः इस्लाम में म्युज़िक के लिए क्या हुक्म है ?

जवाबः शरई हुक्म के हिसाब से म्युज़िक दो तरह की होती हैः

जवाबः 1- हलाल म्युज़िकः जिस म्युज़िक में लह्व व लअब शामिल न हो जैसे मिलेट्री या अज़ादारी से जुड़ी म्युज़िक।

2- हराम म्युज़िकः वह म्युज़िक जिसमें लह्व व लअब शामिल हो या उसमें इस्तेमाल होती हो।

सवालः बर्थ-डे पार्टी का शरीअत में क्या हुक्म है ?

अगर कोई हराम काम न किया जाए तो बर्थ-डे पार्टी में कोई हरज नहीं है। लेकिन बेहतर यह है कि बर्थ-डे में पार्टी करने के बजाए अपने नफ़्स और अपने आमाल का हिसाब-किताब किया जाए।

(आयतुल्लाह ख़ामेनई और आयतुल्लाह सीस्तानी के फ़तवों के मुताबिक़) अहकाम

वह भी राज़ी अल्लाह भी राज़ी

■ नासिर महमूद बेग

माँ सिर्फ़ एक लफ़्ज़ नहीं बल्कि वह मेहरबानी, मोहब्बत और ममता की पूरी एक दुनिया है जिसे शायद लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता। वह हस्ती जो जाड़े में ख़ुद गीली जगह पर सो जाए मगर अपने बच्चे को सूखी जगह पर सुलाती है। माँ वह हस्ती है जो अपने बच्चे के लिए कई-कई रातें जागती है। खाने-पीने और अपने आराम-सुकून का एहसास किये बिना सिर्फ़ अपने बच्चे के लिए ही जीती और मरती है। दिन और रात सिर्फ़ उसके पलने-बढ़ने की फ़िक्र में बिताती है। जो अपने मुँह का निवाला अपने बच्चे को खिला देती है और उफ़ तक नहीं करती। माँ तो वह हस्ती है जो अपने बच्चे के ऊपर किसी मुसीबत को देख कर ख़ुद ही उसके ऊपर अपनी जान निछावर करके अपने आप को ख़ुदा के सुपुर्द कर देती है। यही वजह है कि क़ुरआन में ख़ुदा ने माँ-बाप के हक़ को अदा करने पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है।

आज लोग माँ से मोहब्बत के बारे में सोशल मीडिया पर पोस्ट तो ख़ूब शेयर करते हैं मगर हक़ीक़त में माँ के लिए उनके पास वक़्त ही नहीं है। क्या माँ से प्यार सिर्फ़ लोगों के कुछ लाइक या सब्सक्राइब तक ही सिमट कर रह गया है। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि जिस पल कोई अपनी मां के बारे में पोस्ट कर रहा होता है तभी दूसरी तरफ़ उसकी मा तकलीफ़ में तड़प रही होती है मगर उस बेटे को एहसास तक नहीं होता।

माँ की क़द्र बस वही जानता है जिसकी माँ इस दुनिया से जा चुकी हो अगर हम अपने प्यारे नबी[सo] की ज़िन्दगी के बारे में स्टडी करें तो हमें इस रिश्ते की क़द्र अपने आप समझ में आ जाएगी।

प्यारे नबी हज़रत मोहम्मद[सo] ने हज़रत हलीमा सादिया को देखा तो उन्हें अपनी चादर बिछाकर उस पर बिठाया था क्योंकि उन्होंने ही अल्लाह के रसूल को दूध पिलाया था।

हम में से बहुत से लोगों सुना होगा कि इन्सान के आमाल उसके लिए मुसीबत बन जाते हैं। दुआओं में असर नहीं रहा, सुकून छिन गया, रोज़ी के दरवाज़े छोटे हो गये, जॉब ख़त्म हो गई वग़ैरा-वग़ैरा। हर आदमी अपनी बदक़िस्मती का रोना रोता हुआ दिखाई देता है। वजह सीधी सी है कि हम ने अपने घर से अपनी रहमतों को ही निकाल रखा है। अपनी रहमतों को नाराज़ कर रखा है। सच बात तो यह है कि हम ने अपने सुकून को ही घर से निकाल दिया है और फिर सुकून की तलाश में भागते फिर रहे हैं। अपनी रहमत को घर में मुसीबत समझते हैं और फिर घर से बाहर रहमत ढूँढते फिरते हैं। हमें अपनी इस जन्नत को ठोकर नहीं मारना चाहिए।

इसलिए यही वक़्त है कि अपने माँ-बाप को अपनी रहमतों के लिए घर में बसा लीजिए। दुआओं के दरवाज़े खोलिये। घर जन्नत बन जाएगा।

सोशल मीडिया ने हमें घर में बैठे माँ-बाप से बेगाना बना दिया है। कुछ पलों के लिए सोचिए कि हम अपने बच्चों के बग़ैर एक पल नहीं गुज़ार सकते तो फिर अपने माँ-बाप को अपने बच्चों से कई-कई दिन कैसे दूर रख सकते हैं।

हम बड़े ज़रूर हो गये हैं मगर हैं तो आज भी अपने माँ-बाप के बच्चे ही। उन्हें उनके बच्चे लौटा दीजिए, यह काम आपको ही करना पड़ेगा। उन्हें मुस्कुरा कर एक बार गले से लगाईये और यह एहसास दिलाइये कि आप वही हैं जिसे उन्होंने बचपन में पल-पल देखभाल करके कुछ ख़्वाब बुने थे। उनके ख़्वाबों को टूटने न दीजिए। उनके पास बैठिए और उनकी बात सुनिए।

माँ हो या बाप, सिर्फ़ और सिर्फ़ उनके लिए आपने आख़िरी बार कितना वक़्त निकाला था। जब उनके पास बैठ कर उनके पैर दबाए थे। उन्हें एक मासूम बेटे या बेटी का एहसास दिलाया था। सोचिए और फिर ख़ुद को कोसने के बजाए अभी जाकर उन से मिल लीजिए। माँ-बाप तो माँ-बाप होते हैं। वह कभी आपसे दूर नहीं रह सकते।। दूरियाँ तो हम ने बढ़ाई हुई हैं।

बातें बहुत सारी हैं लेकिन ख़ुलासा यही है कि हमें अपने माँ-बाप के अच्छे बच्चे बनने की कोशिश करना चाहिए।

वह भी राज़ी तो अल्लाह भी राज़ी और फिर दुनिया की नेमतें आपके लिए होंगी। ●

Subscription Form

हां, मैं, नीचे लिखी स्कीम के तहत ***मरयम*** की सब्सक्राइबर बनना चाहती/चाहता हूं।

S.No.:...............

निशान	साल	इश्यूज़	सालाना कवर कीमत	आप दें
☐	1 Year	12	360	360
☐	2 Year	24	720	700
☐	3 Year	36	1080	1000

*Name: Mr./Mrs./Miss ______ Date of birth (Day / Month / Year) ______

*Father/Husband'sName: ______

Education: ______ Profession: ______

*Address: H/No: ______

Post : ______

City/Vill.: ______ Distt.: ______ State: ______ Country.: ______

Land Mark.: ______ Pin: ______ P.O.Box No.: ______

*Mobile No: ______ Phone (Res) ______

e-mail: ______

मौजूदा सब्सक्राइबर्स अपनी कस्टमर ID लिखें: ______ Date .... Signature............................

For Office Use:

subscription from...............................to.........................Subscription ID ______ Receipt no. ....

Address: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

सब्सक्राइबर्स सुविधाएं अगले अंक से उपलब्ध होंगी. समस्त विवाद केवल लखनऊ के सक्षम न्यायालयों और फोरमों के विशिष्ट अधिकार क्षेत्र के अधीन है.

यह आर्डर फार्म भेजी जाने वाली रकम के साथ भेजें।

*नियम व शर्तें लागू।

मैग्ज़ीन नार्मल डाक से भेजी जाती है। रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए Rs. 240 और देना होंगें।

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 email: maryammonthly@gmail.com

इजाज़ा

मरयम मैग्ज़ीन को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए इसको लागत से आधी क़ीमत पर रीडर्स को दिया जाता है जिसकी वजह से इदारे को आप सभी लोगों की फ़ाइनेंशल मदद की सख़्त ज़रूरत है।

हमारी कोशिश है कि इस मैग्ज़ीन के ज़रिए दीनी मालूमात को बेहतरीन क्वालिटी में आप सभी लोगों तक पहुंचाया जाता रहे।

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

LUCKNOW-INDIA

इजाज़ा आयतुल्लाह सीस्तानी

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

P.O.Box No.:37 Chowk Lucknow UP-India

इजाज़ा आयतुल्लाह ख़ामेनई

RNI NO. UPHIN/2012/43577

15 August

India

INDEPENDENCE DAY